राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

का

वार्षिक प्रतिवेदन

2001-2002

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के तत्त्वावधान में संस्थापित)

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के तत्त्वावधान में संस्थापित)

वार्षिक प्रतिवेदन

२००१-२००२

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
५६-५७, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी
नई दिल्ली-११००५८

प्रकाशक:—

निदेशक

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

५६-५७, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी

नई दिल्ली-११००५८

अक्षरयोजक एवं मुद्रक—

अमर प्रिंटिंग प्रैस

८/२५विजय नगर, दिल्ली-९

विषय-सूची

१. प्रस्तावना ५

१.१ भूमिका और कार्य
१.२ कार्यक्रम और क्रियाकलाप
१.३ अध्यापन
१.४ अध्यापक-प्रशिक्षण
१.५ शोध
१.६ प्रकाशन

२. संगठन और स्थापना ७

३. शैक्षणिक विभाग १०

३.१ शैक्षणिक शाखा
३.२ शोध और प्रकाशन शाखा
३.३ पत्राचार पाठ्यक्रम शाखा

४. परीक्षा विभाग १४

५. प्रशासन विभाग १६

६. वित्त विभाग १८

७. योजना अनुभाग २०

८. विद्यापीठ २२

८.१ श्री सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरी
८.२ गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद
८.३ श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जम्मू
८.४ गुरुवायूर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरानाटुकरा (त्रिचूर)
८.५ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जयपुर
८.६ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, लखनऊ
८.७ राजीव गांधी केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, शृंगेरी
८.८ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, गरली, हिमाचल प्रदेश

९. वर्ष की प्रमुख गतिविधियां ३५-५०

९.१. 'स्वयं संस्कृत सीखें' के प्रथम स्तर की सामग्री का लोकार्पण
९.२. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा गठित उच्चस्तरीय समिति का आगमन
९.३. संस्कृतसप्ताहोत्सव
९.४. स्थापना दिवस समारोह
९.५. केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग की बैठक
९.६. इन्टरनेट पर आरम्भ किये जाने वाले योजना का उद्घाटन
९.७. अखिल भारतीय शास्त्रीय प्रतियोगिता
९.८. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियोजन समिति की बैठक
९.९. दूरस्थ शिक्षण की कार्यशाला
९.१०. शोध प्रविधि एवं मातृकाविज्ञान का प्रशिक्षिणशिविर
९.११. संस्कृत छात्रों की ज़िलास्तरीय संस्कृत प्रतियोगिताएँ
९.१२. शिक्षण प्रशिक्षण शिविर
९.१३. पुनर्मुद्रण योजना में पुस्तकों का प्रकाशन

परिशिष्ट— ५१-७७

(क) राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की साधारणसभा के सदस्यों की सूची
(ख) संस्थान की शासी परिषद् के सदस्यों की सूची
(ग) सम्बद्ध संस्थाएँ
(घ) संस्थान की परीक्षाओं को मान्यता देने वाली सरकारें
(ङ) संस्थान की परीक्षाओं को मान्यता देने वाले विश्वविद्यालय

१. प्रस्तावना

१.१ भूमिका और कार्य

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की स्थापना देश भर में संस्कृत की प्रोन्नति एवं विकास के लिए सन् १९७० में हुई तथा संस्था पंजीकरण अधिनियम १८६० (अधिनियम XXI) के अन्तर्गत इसका पंजीकरण किया गया। इसका वित्तीय भार पूर्णतया भारत सरकार वहन करती है। संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार एवं विकास के लिए यह एक शीर्षस्थ संस्था के रूप में कार्य कर रहा है। संस्थान संस्कृत-अध्ययन के विकास के लिए विभिन्न योजनाओं को लागू करने में **मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार** की सहायता करता है। संस्कृत भाषा और शिक्षण के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार और विकास के लिए सन् १९५६ में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा गठित संस्कृत आयोग की संस्तुतियों के प्रभावशाली कार्यान्वयन के लिए यह एक प्रमुख संस्था के रूप में अपनी भूमिका निभा रहा है।

संस्था के ज्ञापन (मेमोरेण्डम ऑफ एसोसियेशन) से परिलक्षित होता है कि राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान का प्रमुख उद्देश्य संस्कृत विद्या और शोध का प्रचार-प्रसार, विकास तथा प्रोत्साहन करना है और संस्थापित अथवा अधिगृहीत सभी केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों के प्रबन्ध के लिए केन्द्रीय प्रशासकीय तथा समन्वय करने वाली संस्था के रूप में कार्य करना है।

१.२ कार्यक्रम और क्रियाकलाप

उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए संस्थान निम्नलिखित कार्यक्रमों एवं क्रियाकलापों का संचालन करता है—

— विभिन्न राज्यों में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों की स्थापना।

— उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक, पूर्व स्नातक, स्नातक, स्नातकोत्तर एवं अनुसंधान स्तर पर परम्परागत पद्धति से संस्कृत के अध्यापन-कार्य को संचालित करना।

— स्नातक स्तर पर अध्यापकों के प्रशिक्षण (शिक्षा शास्त्री) का संचालन।

— संस्कृत वाङ्मय के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान कार्य का संचालन और समन्वयन।

— पारस्परिक अभिरुचि वाली संयुक्त परियोजनाओं को प्रायोजित करने में अन्य संस्थाओं के साथ सहयोग स्थापित करना।

— संस्कृत पुस्तकालयों, पाण्डुलिपि संग्रहालयों की स्थापना और दुर्लभ पाण्डुलिपियों और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन व प्रकाशन।

१.३ अध्यापन

संस्थान के अंगभूत विद्यापीठों में प्राक्शास्त्री से आचार्य स्तर तक का अध्यापन-कार्य संस्थान द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर किया जाता है। स्वैच्छिक संगठनों द्वारा संचालित संस्थान से सम्बद्ध कुछ अन्य संस्कृत संस्थायें भी इस पाठ्यक्रम के

आधार पर अध्यापन करती हैं। संस्कृत शिक्षण की गैर परम्परागत पद्धति से आने वाले छात्रों के सौविध्य के लिए संस्थान के सभी विद्यापीठों में + २ स्तर का एक द्विवर्षीय प्राक्शास्त्री पाठ्यक्रम चलाया जाता है। पुरी और जम्मू विद्यापीठों में प्रथमा (कक्षा ६,७ और ८) से लेकर पूर्वमध्यमा (कक्षा ९-१०) और उत्तरमध्यमा (कक्षा ११-१२) तक विद्यालयस्तरीय पाठ्यक्रम भी चलाया जाता है।

वर्तमान में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान आठ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों का संचालन कर रहा है।

१.४ अध्यापक-प्रशिक्षण

सभी केन्द्रीय विद्यापीठों में एक शैक्षिक सत्र की अवधि का अध्यापकों का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाया जाता है जो प्रयोगात्मक शिक्षण पर बल देता है। इस पाठ्यक्रम में सफल होने वाले विद्यार्थियों को शिक्षाशास्त्री की उपाधि दी जाती हैं।यह उपाधि बी.एड. के समकक्ष होती है।

१.५ शोध

गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ इलाहाबाद, संस्कृत के कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में शोध के लिए पूर्ण रूप से प्रवृत्त है। अन्य सभी विद्यापीठों में भी शोधछात्रों की सुविधा के लिए उनके पंजीकरण की व्यवस्था है। अनुसंधान कार्य पूरा करने के बाद उन्हें संस्थान द्वारा विद्यावारिधि की उपाधि दी जाती है जो पी-एच्. डी. के समकक्ष है।

१.६ प्रकाशन

क. शोधपत्रिका

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान से दो अनुसंधान पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है:-संस्कृत-विमर्श और गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ शोध-पत्रिका। **संस्कृत-विमर्श** का प्रकाशन मुख्यालय द्वारा किया जाता है। दूसरी पत्रिका का प्रकाशन गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद से **जर्नल ऑफ गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद** के नाम से होता है। इसके अतिरिक्त 'उशती' नाम से एक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन भी इस विद्यापीठ से होता है।

ख. ग्रन्थ

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान से उच्चस्तरीय अनुसन्धान परक ग्रन्थों का प्रकाशन होता है।इसमे देश के अनेक प्रान्तों के विद्वानों द्वारा विरचित/सम्पादित ग्रन्थों का प्रकाशन होता है। इस वर्ष यह भी निर्णय लिया गया है कि संस्थान संस्कृत वर्ष की स्मृति को चिरस्थाई बनाने के लिए ३०० अत्यन्त दुर्लभ ग्रन्थों का प्रकाशन 'संस्कृत वर्ष स्मृति ग्रन्थ माला' शृङ्खला में प्रकाशित करेगा।इस शृङ्खला में ३०० अप्रकाशित दुर्लभ ग्रन्थों/उत्तम ग्रन्थों का संस्कृत अनुवाद/मौलिक ग्रन्थ प्रकाशित करने का संकल्प है। इस वर्ष इस शृङ्खला के पाँच ग्रन्थ यन्त्रस्थ हैं। यह भी निर्णय लिया गया है कि दुर्लभ संस्कृत ग्रन्थों का प्रकाशन कर अत्यल्प मूल्य पर विद्वानों को उपलब्ध कराया जाएगा।

संस्थान का अंगभूत गंगानाथ झा विद्यापीठ सतत दुर्लभ एवं अप्रकाशित ग्रन्थों का संपादन कार्य करता है। इस वर्ष विद्यापीठ को मुद्रणार्थ तैयार २४ ग्रन्थों को प्रकाशन की स्वीकृति दी गई जिसमें सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

२. संगठन और स्थापना

साधारण सभा संस्थान की नीतियों का निर्धारण करती है जिसमें २२ सदस्य हैं । राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की साधारण सभा के सदस्यों की सूची संलग्नक 'क' में दी गयी है । शासी परिषद् शीर्षस्थ शासी निकाय है, जिसमें अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के अतिरिक्त छः सदस्य हैं । साधारण सभा द्वारा स्वीकृत नीतियों का क्रियान्वयन शासी परिषद् द्वारा किया जाता है । वर्तमान शासी परिषद् का गठन संलग्नक 'ख' पर संलग्न है ।

शासी परिषद् के कार्यों के सम्पादन में निम्नलिखित समितियाँ/परिषद् सहायता करती हैं—

१. अर्थ समिति

२. विद्या परिषद्

३. प्रकाशन समिति

४. शोध समिति

५. परीक्षा मण्डल

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान चार विभागों के द्वारा कार्य करता है:—

१. शैक्षणिक विभाग

२. परीक्षा विभाग

३. प्रशासन विभाग

४. वित्त विभाग

शैक्षणिक विभाग की तीन शाखाएँ हैं, जिनके नाम हैं:—

१. शैक्षणिक शाखा

२. शोध और प्रकाशन शाखा

३. पत्राचार पाठ्यक्रम शाखा

इनमें से प्रत्येक शाखा का प्रधान अधिकारी एक एक उप-निदेशक होता है । ये सभी अधिकारी संस्थान के निदेशक की सहायता करते हैं जो संस्थान का सर्वोच्च कार्यपालक अधिकारी होता है और साधारण सभा एवं शासी परिषंद् द्वारा स्वीकृत नीतियों और कार्यक्रमों के संपादन के लिए उत्तरदायी होता है । संस्थान का निदेशक भारत सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है ।

२.१ शैक्षणिक विभाग

इसकी तीन शाखाएँ हैं—

२.१.१ शैक्षणिक शाखा

यह शाखा मुख्यत: शैक्षिक स्तर के निर्धारण, विभिन्न पाठ्यक्रमों के निर्माण तथा शैक्षणिक कार्यक्रमों के निर्धारण के लिए उत्तरदायी है। इसके अतिरिक्त यह शाखा संस्कृत संस्थाओं को सम्बद्धता प्रदान करने तथा मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करने का कार्य भी करती है।

२.१.२ अनुसंधान एवं प्रकाशन शाखा

यह शाखा संस्थान के अंगीभूत विद्यापीठों के प्रकाशन और अनुसंधान कार्यों के समन्वय और कार्यान्वयन से सम्बद्ध है। यह संस्थान के अनुसंधान एवं प्रकाशन कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं का कार्यान्वयन भी करती है।

२.१.३ पत्राचार पाठ्यक्रम शाखा

यह शाखा पत्राचार पाठ्यक्रम के सुचारु रूप से संचालन के लिए उत्तरदायी है। यह पाठ्यक्रम दो स्तर पर संचालित है—

(क) संस्कृत का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम-प्रथम वर्ष (हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम)

(ख) संस्कृत का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम-द्वितीय वर्ष (हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम)

२.२ परीक्षा विभाग

परीक्षा विभाग निम्नलिखित पाठ्यक्रमों के लिए वार्षिक और पूरक परीक्षाओं का आयोजन करता है—

प्रथमा	(कक्षा VIII)
पूर्वमध्यमा	(कक्षा X)
उत्तरमध्यमा	(कक्षा XII)
प्राक्शास्त्री	(कक्षा XII)
शास्त्री	(बी० ए०)
आचार्य	(एम० ए०)
शिक्षाशास्त्री	(बी० एड्०)

इसके अतिरिक्त शिक्षाशास्त्री में प्रवेश के लिए प्रतियोगी प्रवेश-परीक्षा पूर्व-शिक्षाशास्त्री परीक्षा (पी.एस.एस.टी.) का आयोजन भी किया जाता है।

यह विभाग शोध-उपाधियां प्रदान करने के लिए केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों और सम्बद्ध संस्थाओं के विद्यार्थियों के शोध-प्रबंधों का मूल्यांकन एवं उनकी मौखिक परीक्षा की भी व्यवस्था करता है।

२.३ प्रशासन विभाग

यह विभाग संस्थान और उसके अंगीभूत विद्यापीठों के सामान्य प्रशासनिक कार्यों की देखभाल करता है। नियुक्तियों, पदस्थापन, स्थानान्तरण तथा अन्य स्थापना संबंधी कार्यों की योजना बनाना और विद्यापीठों पर नियन्त्रण रखना इस विभाग का प्रमुख दायित्व है।

(ख) छात्रवृत्ति

छात्रवृत्ति कार्यक्रम की दो प्रमुख शाखाएं है जिसमें से एक विद्यापीठ के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान करने संबंधित है। यह छात्रवृत्ति प्रत्येक विद्यापीठ के बजट से दी जाती है। वर्ष २००१-२००२ में अंगभूत विद्यापीठों के विद्यार्थियों को दी जाने वाली छात्रवृत्तियों का विवरण इस प्रकार है :

२.४ वित्त विभाग

इस विभाग का कार्य आय-व्यय का विवरण तैयार करना, अनुदान की प्राप्ति तथा उसका वितरण, वित्तीय व्यवस्था और वार्षिक लेखा-जोखा तैयार करना है । यह भविष्य निधि का भी प्रबन्ध करता है और शिक्षा मन्त्रालय की योजना के अन्तर्गत प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्ति की राशि का भी वितरण करता है ।

विद्यापीठ

निम्नलिखित केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के अंगीभूत विद्यापीठ हैं—

क्रम सं०	विद्यापीठ का नाम	स्थान
१.	गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	इलाहाबाद
२.	श्री सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	पुरी
३.	श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	जम्मू
४.	गुरूवायूर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	त्रिचूर
५.	केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	जयपुर
६.	केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	लखनऊ
७.	श्री राजीव गांधी केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	शृंगेरी (कर्नाटक)
८.	केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	गरली (हिमाचल प्रदेश)

ये विद्यापीठ निम्नलिखित पाठ्यक्रमों के लिए अध्यापन कार्य करते हैं:—

क्रम सं०	पाठ्यक्रम	के समकक्ष
१.	प्रथमा	मिडिल
२.	पूर्वमध्यमा	सेकेण्डरी
३.	उत्तरमध्यमा/प्राक्शास्त्री	सीनियर सेकेण्डरी
४.	शास्त्री	बी.ए.
५.	आचार्य	एम.ए.
६.	शिक्षाशास्त्री	बी.एड.
७.	शिक्षाचार्य	एम.एड.
८.	विद्यावारिधि	पी-एच.डी.

प्रथमा से उत्तरमध्यमा तक का पाठ्यक्रम विद्यालय स्तर का है, जिसका संचालन केवल पुरी और जम्मू विद्यापीठ में होता है । प्राक्शास्त्री यद्यपि विद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम है, लेकिन बफर कोर्स होने के कारण इसे सभी विद्यापीठों में चलाया जाता है ।

३. शैक्षणिक विभाग

३.१ शैक्षणिक शाखा

इस विभाग का प्रधान अधिकारी उप-निदेशक होता है । प्रस्तुत वर्ष में इस विभाग में निम्नलिखित पदाधिकारी एवं कर्मचारी कार्यरत हैं—

१. एक अनुभाग अधिकारी

२. एक सहायक

३. एक वरिष्ठ आशुलिपिक

४. एक उच्च श्रेणी लिपिक

५. दो निम्न श्रेणी लिपिक

यह अनुभाग निम्नलिखित क्रियाकलापों से सम्बन्धित है—

(क) शैक्षिक क्रियाकलाप

यह संस्थान् के शैक्षिक क्रियाकलापों का प्रमुख व्यस्थापक है । विभिन्न कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम-निर्माण इसका मुख्य कार्य है । प्रथमा से आचार्य तक के संस्कृत विषयों के पाठ्यक्रम बनाने के लिए अलग-अलग अध्ययन मण्डलों का गठन किया जाता है ।

जहां तक अंग्रेजी, हिन्दी और आधुनिक विषयों जैसे इतिहास आदि के पाठ्यक्रम का प्रश्न है, केन्द्रीय माध्यामिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम को अपनाया जाता है । शास्त्री कक्षा के लिए आधुनिक विषयों जैसे हिन्दी और अंग्रेजी आदि के लिए समान्यतया दिल्ली विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम को अपनाया जाता है ।

(ख) प्रवेश

संस्कृत के विभिन्न परीक्षा-निकायों की परीक्षाओं की समकक्षता को ध्यान रखते हुए संस्थान के विद्यापीठों में छात्रों को विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश दिया जाता है । वर्ष २००१-२००२ के दौरान केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों का विवरण इस प्रकार है—

क्रम सं०	विद्यापीठ	प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या	महिला छात्र	अनुसूचित जाति/ जनजाति
१.	इलाहाबाद	२५	१०	—
२.	पुरी	४७४	२५७	१६
३.	जम्मू	३६८	३२	१६
४.	गुरुवायूर	३२५	११५	४०
५.	जयपुर	३५१	३०	३६
६.	लखनऊ	१५२	२३	३५
७.	शृंगेरी	१०६	१४	१०
८.	गरली	२८३	१०८	१९

(ग) छात्रावास-सुविधा

वर्ष २००१-२००२ में विभिन्न केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ के छात्रों को छात्रावास सुविधा प्रदान की गयी जिनकी संख्या निम्नलिखित है:—

क्रम सं०	विद्यापीठ	विद्यार्थियों की संख्या
१.	इलाहाबाद	—
२.	पुरी	१३२
३.	जम्मू	४०
४.	गुरुवायूर	—
५.	जयपुर	४९
६.	लखनऊ	५२
७.	शृंगेरी	१८
८.	गरली	—

३.२ शोध और प्रकाशन शाखा

शोध और प्रकाशन शाखा का प्रमुख एक सहायक होता है । प्रस्तुत वर्ष में इस शाखा में निम्नलिखित कर्मचारी कार्यरत हैं—

१. अनुभाग अधिकारी	१
२. शोध सहायक	१
३. सहायक दो	२
४. कनिष्ठ श्रेणी लिपिक	२
५. चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	१

यह शाखा मुख्यालय और केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों के शोध और प्रकाशन कार्यों में सामंजस्य स्थापित करने तथा उनकी प्रगति सुनिश्चित करने के लिए कार्य करता है । इसके अतिरिक्त मानव संसाधन विकास मंत्रालय से स्थानान्तरित निम्नलिखित योजनाओं को क्रियान्वित करता है—

१. संस्कृत-साहित्य के साथ-साथ संस्कृत समाचारपत्रों और पत्रिकाओं का प्रकाशन ।

२. संस्कृत-ग्रन्थों का क्रय और दुर्लभ ग्रन्थों का पुनर्मुद्रण ।

३. संस्कृत की पाण्डुलिपियों का क्रय और प्रकाशन ।

वर्ष २००१-२००२ में अनुदान समिति की दो बैठकें हुईं जिनमें विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत प्रस्ताव स्वीकृत किए गए ।संस्कृत पत्रिकाओं के प्रकाशनानुदान में वृद्धि की गई । केन्द्रीय शोधमण्डल की एक बैठक हुई ।इसमें विद्यावारिधि में पञ्जीकरण को स्वीकृति देने के अतिरिक्त शोध के स्तर का उन्नयन करने के लिए विभाग द्वारा 'प्राक् शोध परीक्षा' (प्राशोप) के आयोजन का निर्णय लिया गया । शोधार्थियों के प्रशिक्षण के लिए 'शोध प्रविधि एवं हस्तलेख विज्ञान' की कार्यशालाएँ आयोजित करने का निर्णय भी लिया गया ।

३.३. पत्राचार पाठ्यक्रम शाखा

इस शाखा का प्रमुख सहायक निदेशक होता है । वर्तमान में अधिकारी के सेवानिवृत्ति के कारण इसका कार्यभार एक शोध सहायक के पास है । इसके अतिरिक्त निम्नलिखित कर्मचारी कार्यरत हैं—

१. शोधसहायक	१
२. अनुभाग अधिकारी	१
३. अनुदेशक	२
४. कनिष्ठ श्रेणी लिपिक	२
५. परिचारक	२

पत्राचार पाठ्यक्रम शाखा की स्थापना शैक्षणिक विभाग के अन्तर्गत की गयी थी । यह शाखा अनेक वर्षों से पत्राचार के माध्यम से हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में प्रारम्भिक स्तर पर संस्कृत के शिक्षण का कार्य कर रही है । यह द्विवर्षीय पाठ्क्रम दो स्तरों में विभाजित है, जिसमें से प्रत्येक में २१ पाठ हैं ।

वर्ष २००१-२००२ के अन्तर्गत इस पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या का विवरण इस प्रकार है—

प्रथम वर्ष का पाठ्यक्रम	विद्यार्थियों की संख्या	विदेशी छात्र
(क) हिन्दी माध्यम	१४०	
(ख) अंग्रेजी माध्यम	८७	८
द्वितीय वर्ष का पाठ्यक्रम		
(क) हिन्दी माध्यम	४०	
(ख) अंग्रेजी माध्यम	११	
कुल योग	४३१	

यह पाठ्यक्रम भारतीय छात्र के लिए ५०-०० रुपये मात्र वार्षिक और विदेशी छात्र के लिए २० अमेरिकी डालर मात्र शुल्क लेकर चलाया जाता है ।

इन पाठ्यक्रमों को और अधिक लोकप्रिय बनाने और अधिक से अधिक विद्यार्थियों को यह सुविधा प्रदान करने के लिए संस्थान ने विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय के माध्यम से संस्कृत के व्यापक प्रचार के लिए बहुत से कदम उठाए हैं । इन प्रयासों के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों के अतिरिक्त अनेक उच्च पदाधिकारियों एवं विभिन्न आयु-वर्ग एवं व्यवसाय के लोगों ने पत्राचार पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया है और संस्कृत सीख रहे हैं ।जो शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा कर लेते हैं, उन्हें **संस्कृत-प्रवेश** प्रमाण पत्र दिया जाता है ।

४. परीक्षा विभाग

परीक्षा विभाग के प्रमुख उपनियन्त्रक (परीक्षा) हैं, जिनके नीचे दो और अधिकारी सहायक निदेशक और अनुभाग अधिकारी हैं। वर्तमान में इस विभाग में निम्नलिखित कर्मचारी कार्यरत हैं—

१. उपनिदेशक	१
२. अनुभाग अधिकारी	१
३. शोध सहायक	२
४. अनुदेशक	२
५. कनिष्ठ श्रेणी लिपिक	१
६. परिचारक	१
७. उच्च श्रेणी लिपिक	१
८. निम्न श्रेणी लिपिक	३
९. चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी	३

संस्थान की परीक्षाओं का आयोजन इसका मुख्य दायित्व है। संस्थान के द्वारा प्रथमा से आचार्य, शिक्षाशास्त्री तथा विद्यावारिधि की परीक्षाओं का संचालन किया जाता है। इन परीक्षाओं में अंगीभूत विद्यापीठों तथा सम्बद्ध संस्थाओं दोनों के परीक्षार्थी परीक्षा में बैठते हैं। ये परीक्षाएं विद्यापरिषद् द्वारा निर्धारित मार्गदर्शक सिद्धान्तों के अनुरूप बनाए गए पाठ्यक्रमों के अनुसार संचालित की जाती हैं।

वर्ष २०००-२००१ में परीक्षाओं में उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या इस प्रकार है—

क्रम सं०	कक्षा	परीक्षा में बैठने वाले छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण	प्रतिशत
१.	प्रथमा-तृतीय वर्ष	३५७	३२४	९०%
२.	पूर्वमध्यमा प्रथम वर्ष	१३६३	१२२७	९०%
३.	पूर्वमध्यमा द्वितीय वर्ष	१११९	९८८	८८.२९%
४.	उत्तरमध्यमा-प्रथम वर्ष	५८४	४६५	७९.६२%
५.	उत्तरमध्यमा-द्वितीय वर्ष	३३०	३२०	९७%
६.	प्राक्शास्त्री-प्रथम वर्ष	११७९	१०१२	८५.८३%
७.	प्राक्शास्त्री-द्वितीय वर्ष	८१५	७४२	९१%
८.	शास्त्री प्रथम वर्ष	१४८४	१४७१	९९%
९.	शास्त्री द्वितीय वर्ष	१२११	११६०	९५%

१०.	शास्त्री तृतीय वर्ष	७८०	७३९	९४.७४%
११.	आचार्य प्रथम वर्ष	१३१२	१०१५	७७%
१२.	आचार्य द्वितीय वर्ष	७४२	६६८	९०%
१३.	शिक्षाशास्त्री	३६१	३४७	९६.१२%

वर्ष २००१-२००२ में विभिन्न केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों में शिक्षाशास्त्री कक्षा में प्रवेश के लिए पूर्व-शिक्षाशास्त्री परीक्षा आयोजित की गयी । इसके अतिरिक्त १९ छात्रों को वर्ष २००१-२००२ में विद्यावारिधि उपाधि प्रदान की गई ।

(ङ) संस्थाओं की सम्बद्धता

संस्थान का प्रारम्भ कुछ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों से हुआ था । बाद में कुछ स्वतन्त्र संस्थाओं को भी इससे सम्बद्ध कर लिया गया । पिछले कुछ वर्षों से सम्बद्ध संस्थाओं की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है । संस्थान से सम्बद्ध संस्थाओं की सूची संलग्नक "ग" में दी गयी है । इन स्वतन्त्र संस्कृत संस्थाओं को प्रथमा से आचार्य एवं विद्यावारिधि के पाठ्यक्रमों के लिए सम्बद्धता दी गई है ।

५. प्रशासन विभाग

इस विभाग का प्रमुख उप-निदेशक होता है । प्रस्तुत वर्ष में निम्नलिखित अधिकारी/कर्मचारी इस विभाग में कार्य कर रहे हैं—

१. एक अनुभाग अधिकारी

२. दो सहायक

३. एक उच्च श्रेणी लिपिक

४. पाँच निम्न श्रेणी लिपिक

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मुख्यालय में प्रशासन विभाग नियमानुसार कार्यालय को व्यवस्थित ढंग से चलाने का कार्य करता है । यह संस्थान के अंगीभूत विद्यापीठों को अधिक प्रभावी और कार्यकुशल बनाने के लिए आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करता है । यह विभाग प्रमुख रूप से सामान्य प्रशासन, स्थापना संबंधी मामलों, सेवा और आपूर्ति, भूमि और भवन की प्राप्ति, नए केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों की स्थापना, संस्थान की साधारण सभा एवं शासी परिषद् की बैठकों का संचालन आदि करता है ।

जिन विद्यापीठों के पास अपना भवन नहीं है, उनके लिए जमीन प्राप्त करने और उनके लिए भवन बनाने की दिशा में प्रयास किए गए हैं । जम्मू, जयपुर, लखनऊ, पुरी, एवं शृंगेरी विद्यापीठों के भवन निर्माण की प्रक्रिया चल रही है ।

चार अन्य विद्यापीठों, दो बम्बई (महाराष्ट्र) में, एक भोपाल (मध्यप्रदेश) में और एक मुजफ्फरपुर (बिहार) में, की स्थापना का मामला मंत्रालय में विचाराधीन है ।

छात्रवृत्ति

वर्तमान सत्र में इस विभाग का एक अतिरिक्त अनुभाग छात्रवृत्ति वितरण का कार्य भी देखता है । इस अनुभाग में निम्नलिखित कर्मचारी कार्यरत हैं—

१. कार्यालय अधीक्षक	१
२. सहायक	१
३. उच्च श्रेणी लिपिक	१

छात्रवृत्ति इकाई दो प्रकार के छात्रवृत्ति के वितरण का कार्य देखती है । प्रथम छात्रवृत्ति अंगभूत विद्यापीठों के विद्यार्थियों को दी जाती है । २००१-२००२ में विद्यापीठों के विद्यार्थियों को दी जाने वाली छात्रवृत्ति का विवरण इस प्रकार है—

क्रम सं०	विद्यापीठ का नाम	छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या
१.	गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद	१
२.	श्री सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरी	३९५
३.	श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जम्मू	२५५
४.	गुरुवायूर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, केरल	३२५
५.	केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जयपुर	२८५
६.	केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, लखनऊ	११७
७.	राजीव गांधी केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, शृंगेरी (कर्नाटक)	७६
८.	केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, गरली (हि० प्र०)	२४९

दूसरी छात्रवृत्ति विद्यापीठ के छात्रों के अतिरिक्त अन्य छात्रों/शोधार्थियों के लिए है जो दो प्रकार की है:—

१. परम्परागत पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिए शोध-छात्रवृत्ति ।

२. मैट्रिक के बाद की छात्रवृत्ति (इन्टर, बी० ए०, एम.ए,,पी-एच.डी.) और उसके समकक्ष परम्परागत पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए ।

वर्ष २००१-२००२ के दौरान छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों का विवरण इस प्रकार है:—

क्रम सं०	पाठ्यक्रम	नई छात्रवृत्तियां (प्रथम वर्ष)	नवीकरण (द्वितीय वर्ष)
१.	प्राक्शास्त्री/उत्तरमध्यमा	२८५	८५
२.	इन्टरमीडियेट	८४१	९७
३.	बी० ए०	४४८	१०६
४.	शास्त्री	२२७	१६
५.	एम० ए०	१५४	३९
६.	आचार्य	९८	२
७.	पी-एच० डी०	३०	२६
८.	विद्यावारिधि	२५	४
		२१०८	३७८

६. वित्त विभाग

इस विभाग का प्रमुख अधिकारी उपनिदेशक है । विभाग के अन्य कर्मचारियों में एक लेखाधिकारी, एक सहायक, तीन उच्च श्रेणी लिपिक तथा दो निम्न श्रेणी लिपिक हैं ।

बजट (२००१-२००२)

वर्ष २०००-२००१ के बचे हुए १८६.५१ लाख रुपये को वित्तीय वर्ष २००१-२००२ में समाविष्ट किया गया । मन्त्रालय के द्वारा इस वर्ष कुल मिलाकर २२८६.५१ लाख रुपये की राशि (पूर्व वर्ष की अवशिष्ट राशि सहित) स्वीकृत की गई । इस राशि को अंगीभूत इकाइयों में निम्नलिखित प्रकार से वितरित किया गया है:— (रूपये का अंक लाखों में)

इकाई		योजनागत	योजनेतर	कुलयोग
१.	मुख्यालय	७४३.२२	७४३.६१	१४८६.८३
२.	पुरी विद्यापीठ	१६१.००	१४३.७८	३०४.७८
३.	जम्मू विद्यापीठ	३०७.३४	१२५.००	४३२.३४
४.	इलाहाबाद विद्यापीठ	९.४९	१००.६५	११०.१४
५.	गुरुवायूर विद्यापीठ	—	१०७.६०	१०७.६०
६.	जयपुर विद्यापीठ	१८७.००	१०८.५०	२९५.५०
७.	लखनऊ विद्यापीठ	५०.००	८५.१५	१३५.१५
८.	शृंगेरी विद्यापीठ	८५.९८	—	८५.९८
९.	गरली विद्यापीठ	३५.००	—	३५.००
१०.	भोपाल विद्यापीठ के लिए	—	—	—
	कुल योग	१५७९.०३	१४१४.२९	२९९३.३२

यह राशि वेतन, भत्ते, छात्रवृत्तियां प्रसिद्ध संस्कृत विद्वानों को राष्ट्रपति सम्मान एवं अन्य रख रखाव की मदों पर खर्च की गई । वित्तीय वर्ष के अन्त में १७२.३१ लाख रुपये (योजनागत ३२.६७ लाख रुपये तथा योजनेतर १३९.६४ लाख रुपये) की धनराशि व्यय न होने के कारण अवशिष्ट रही ।

लेखा

अंगभूत विद्यापीठों का लेखा सम्बद्ध महालेखाकार द्वारा विधिवत् परीक्षित एवं प्रमाणित किया गया । वर्ष २००१-२००२ का समेकित लेखा दिनांक १-११-२००२ को परीक्षित किया गया । समेकित प्राप्ति एवं भुगतान लेखा का विवरण संलग्नक "च" में दिया गया है ।

भविष्य निधि खातों का रख-रखाव

यह विभाग मुख्यालय के अधिकारियों व अन्य कर्मचारियों के वेतन और भविष्य निधि वालों का रख-रखाव करता है : वित्तीय वर्ष के अंत में प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी को उसके वार्षिक भविष्य निधि खाते का विवरण प्रदान किया गया ।

लेखा परीक्षा आपत्तियों का निराकरण

वर्ष के दौरान लेखा परीक्षा आपत्तियों को निपटाने के लिए संगठित प्रयास किए गए । इसके लिए सभी विद्यापीठों को यह निर्देश दिया गया कि वे आवश्यक सुधारात्मक कार्यवाही करें । इसके अनुपालन में लेखा परीक्षाधिकारियों को उत्तर भेजे गए । इस प्रकार इस वर्ष में बहुत सी लेखा-परीक्षा-आपत्तियों को निपटाया गया ।

७. योजना अनुभाग

इस विभाग का कुछ कार्य वर्तमान में उपनिदेशक (वित्त) के अधीन होता है तथा कुछ भाग उपनिदेशक (प्रशासन) के अधीन होता है । इस अनुभाग में निम्नलिखित कर्मचारी कार्यरत हैं—

१. अनुभाग अधिकारी	१
२. अनुदेशक	२
३. उच्च श्रेणी लिपिक	१
४. निम्न श्रेणी लिपिक	२
५. चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	२

संस्कृत भाषा एवं साहित्य के विकास और प्रचार-प्रसार के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा स्थानान्तरित अनेक योजनाओं को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान क्रियान्वित कर रहा है । जैसे:—

(i) स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों को वित्तीय सहायता

२००१-२००२ में इस योजना के अन्तर्गत चुने हुए ७४२ संस्कृत संस्थाओं को संस्कृत अध्यापकों के वेतन, विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति, पुस्तकालय, तथा विद्यालय के भवन निर्माण हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है । वर्ष में इस योजना के अन्तर्गत ३६२.७२ लाख रुपये की धनराशि खर्च की गई ।

(ii) आदर्श संस्कृत महाविद्यालय/शोध संस्थान

इस योजना के अन्तर्गत देश के विभिन्न भागों में २१ संस्थाएं चल रही हैं । इस योजना के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त संस्थाओं को आवर्ती मदों पर ९५% तथा अनावर्ती मदों पर ७५ % अनुदान दिया जाता है । इस वर्ष योजना में २७६.८६ लाख तथा योजनेतर में २७३.१७ लाख रुपये की धनराशि संस्थान के द्वारा इन संस्थाओं को दी गई ।

(iii) शास्त्र चूड़ामणि योजना

इस योजना के अन्तर्गत आदर्श संस्कृत पाठशालाओं और राज्य सरकारों द्वारा चलाए जा रहे संस्कृत महाविद्यालयों एवं स्वैच्छिक संगठनों में सेवानिवृत्त प्रख्यात संस्कृत विद्वानों की सेवाओं का उपयोग किया जाता है ।

इस योजना को आरंभ करने का उद्देश्य यह है कि परम्परागत पद्धति से संस्कृत शिक्षा प्रदान करने वाले केन्द्रों में विभिन्न शास्त्रीय विषयों के गहन अध्ययन को संरक्षित किया जा सके ।

योजना के अनुसार परम्परागत संस्कृत विद्वानों की नियुक्ति विभिन्न संगठनों में की जाती है । इस योजना के अन्तर्गत इस वर्ष २२.०४ लाख रुपये की राशि खर्च की । प्रत्येक विद्वान् को २५०० रुपये (अप्रैल १९९८ से) प्रतिमाह प्रथमत: दो वर्ष के लिए दिये जाते हैं । अनुदान-समिति की संस्तुति पर एक वर्ष के लिए इनकी नियुक्ति का कार्यकाल बढ़ाया जा सकता है ।

(iv) व्यावसायिक प्रशिक्षण योजना

इस योजना के अन्तर्गत व्यावसायिक विषयों जैसे ज्योतिष, कर्मकाण्ड, पेलियोग्राफी, कैटलागिंग, पाण्डुलिपि-विज्ञान, संस्कृत आशुलिपि और टंकण आदि में कार्यगोष्ठियों के आयोजन तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए चुने हुए संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है ।

प्रस्तुत वर्ष में भारत सरकार के द्वारा इस योजना के अन्तर्गत २.४५ लाख रुपये व्यय किए गये हैं ।

(v) संस्कृत शब्दकोश परियोजना

ऐतिहासिक सिद्धांतों के आधार पर १५०० ई. पू. से १९०० ई. तक की अवधि का एक संस्कृत शब्द कोश डेकन कालेज, पूना के द्वारा तैयार किया जा रहा है । यह परियोजना वर्ष १९४८ से आरम्भ की गई थी । डेकन कालेज पूना का संस्कृत शब्दकोश परियोजना विभाग प्रधान संपादक की अध्यक्षता में कार्य कर रहा है । अब तक इस शब्दकोश के छ: खण्ड पांच खण्ड, प्रत्येक तीन भाग व छठा खण्ड एक भाग और ३०४८ पृष्ठ मुद्रित हो चुके हैं । कार्य प्रगति पर है । यह परियोजना प्रमुख रूप से भारत सरकार के द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त है तथा महाराष्ट्र सरकार के द्वारा भी कुछ वित्तीय सहायता दी जाती है । वर्ष २००१-२००२ के दौरान राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने शब्द कोश परियोजना के लिए ३० लाख रुपये की धनराशि स्वीकृत की है ।

(vi) अखिल भारतीय शास्त्रीय वाक्स्पर्धा

प्रतिवर्ष की तरह संस्थान ने इस वर्ष भी देश के विभिन्न भागों में अध्ययन करने वाले संस्कृत के पारम्परिक छात्रों के लिए अखिल भारतीय शास्त्रीय वाक्स्पर्धा का आयोजन शृंगेरी कर्नाटक में दिसम्बर, २००१ में किया गया । छात्रों के संस्कृत में भाषण कौशल को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यह प्रतियोगिता आठ शास्त्रीय विषयों में आयोजित की गई— साहित्य, व्याकरण, मीमांसा, वेदान्त, न्याय वैशेषिक, सांख्ययोग, और श्लोकान्त्याक्षरी एवं समस्यापूर्ति । विजयी प्रतिस्पर्धियों को नकद पुरस्कार के अलावा स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदकों द्वारा विभूषित किया गया इस वर्ष से न्याय, व्याकरण एवं काव्य विषयों में शलाका परीक्षा को भी स्पर्धा में सम्मिलित किया गया है ।५.३८ लाख रूपए इस योजना हेतु निर्धारित थे जिसमें रू० ५.३७८१५ व्यय हुए ।

(viii) राष्ट्रपति द्वारा संस्कृत, पालि-प्राकृत, उर्दू, फारसी के सम्मानित विद्वानों को मानदेय

राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित विद्वानों को संस्थान प्रति वर्ष ५०,०००/- रुपये की मानदेय राशि देती है । वर्ष के दौरान इस मद में १४६.४५लाख रुपये खर्च किय गये ।

८. विद्यापीठ

८-१ श्री सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरी

परम्परागत संस्कृत अध्ययन अध्यापन में चिरकाल से सम्बद्ध, राज्य सरकार के अन्तर्गत संचालित सदाशिव संस्कृत कालेज, पुरी का १५ अगस्त १९७१ को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के द्वारा अधिग्रहण किया गया। पुराने सदाशिव संस्कृत कालेज, पुरी का नाम बदल कर श्री सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरी रखा गया।

यह विद्यापीठ विभिन्न विभागों जैसे साहित्य, नव्यव्याकरण, धर्मशास्त्र, पुराणेतिहास, ज्योतिष, अद्वैतवेदांत, नव्यन्याय, सर्वदर्शन आदि में प्रथमा से आचार्य तक का शिक्षण कार्य कर रहा है।

इन विषयों के अतिरिक्त इसमें आधुनिक विषयों जैसे-अंग्रेजी, हिन्दी, उड़िया, इतिहास और गणित में शास्त्री और विद्यालय स्तर की कक्षाओं में संस्थान के पाठ्यक्रम के अनुसार अध्यापन कार्य होता है। यहाँ शिक्षाशास्त्री (प्रशिक्षण) पाठ्यक्रम भी चलाया जा रहा है।

प्रवेश

प्रस्तुत वर्ष में विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले छात्रों का विवरण इस प्रकार है:—

	कक्षा	छात्र संख्या
१.	प्रथमा-प्रथम वर्ष	—
२.	प्रथमा-द्वितीय वर्ष	—
३.	प्रथमा-तृतीय वर्ष	—
४.	पूर्वमध्यमा-प्रथम वर्ष	०२
५.	पूर्वमध्यमा-द्वितीय वर्ष	०२
६.	उत्तरमध्यमा-प्रथम वर्ष	०३
७.	उत्तरमध्यमा-द्वितीय वर्ष	०५
८.	प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष	२९
९.	प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष	३२
१०.	शास्त्री प्रथम वर्ष	४९
११.	शास्त्री द्वितीय वर्ष	४६
१२.	शास्त्री तृतीय वर्ष	४४

१३.	आचार्य प्रथम वर्ष	१०७
१४.	आचार्य द्वितीय वर्ष	९५
१५.	शिक्षाशास्त्री	६१
	कुल योग	५२२

इस वर्ष अनुसूचित जाति/जनजाति के १६ छात्रों को प्रवेश दिया गया।

छात्रवृत्ति

२००१-२००२ में छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्रों का विवरण इस प्रकार है:—

	कक्षा	छात्र संख्या
१.	प्रथमा-प्रथम वर्ष	—
२.	प्रथमा-द्वितीय वर्ष	—
३.	प्रथमा-तृतीय वर्ष	—
४.	पूर्वमध्यमा-प्रथम वर्ष	२
५.	पूर्वमध्यमा-द्वितीय वर्ष	—
६.	उत्तरमध्यमा-प्रथम वर्ष	१
७.	उत्तरमध्यमा-द्वितीय वर्ष	४
८.	प्राक्शास्त्री-प्रथम वर्ष	२६
९.	प्राक्शास्त्री-द्वितीय वर्ष	२८
१०.	शास्त्री-प्रथम वर्ष	४१
११.	शास्त्री-द्वितीय वर्ष	४२
१२.	शास्त्री-तृतीय वर्ष	४०
१३.	आचार्य-प्रथम वर्ष	१००
१४.	आचार्य-द्वितीय वर्ष	८१
१५.	शिक्षाशास्त्री	३०
	कुल योग	३९५

परिणाम

प्रकृत वर्ष में विद्यापीठ की विभिन्न परीक्षाओं का परिणाम इस प्रकार रहा—

कक्षा	प्रतिशत
प्रथमा-प्रथम वर्ष	—
द्वितीय वर्ष	—
तृतीय वर्ष	—
पूर्वमध्यमा-प्रथम वर्ष	—
द्वितीय वर्ष	—
उत्तरमध्यमा-प्रथम वर्ष	६७%
द्वितीय वर्ष	८३%
प्राक्शास्त्री-प्रथम वर्ष	७०%
द्वितीय वर्ष	८५%
शास्त्री-प्रथम वर्ष	७८%
द्वितीय वर्ष	८८%
तृतीय वर्ष	७८%
आचार्य-प्रथम वर्ष	८२%
द्वितीय वर्ष	९३%
शिक्षाशास्त्री	९२%

८.२ गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद

गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के अंगीभूत एक शोध संस्थान के रूप में कार्य कर रहा है। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की विद्यावारिधि उपाधि हेतु शोधकार्य करने के लिए विद्यापीठ प्रतिवर्ष एक निश्चित संख्या में शोध छात्रों को प्रवेश देता है। विद्यापीठ में प्रविष्ट शोध-छात्र विद्यापीठ के शैक्षिक सदस्य के निर्देशन में कार्य करते हैं तथा पुस्तकालय एवं पाण्डुलिपि विभाग में उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग करते हैं। विद्यापीठ का पुस्तकालय एवं पाण्डुलिपियां न केवल उसके छात्रों और विद्वानों के लिए सीमित हैं अपितु विद्यापीठ संस्कृत एवं प्राचीन भारतीय संस्कृति में अभिरुचि रखने वाले समाज के विभिन्न वर्गों के विद्वानों एवं शोधार्थियों को अपनी क्षमता के अनुसार इसके पुस्तकालय के उपयोग के लिए आमन्त्रित करता है।

विद्यापीठ के शैक्षिक सदस्य शोधार्थियों के निर्देशन के अतिरिक्त संस्थान द्वारा दिए गए विषयों पर शोध-कार्य भी करते हैं। विद्यापीठ की शोध-परियोजना का कार्य न केवल वैयक्तिक रूप से अपितु सामूहिक रूप से भी किया जाता है।

प्रस्तुत वर्ष २००१-२००२ में विद्यापीठ में २५ शोधार्थियों को विद्यावारिधि के लिए नामांकित किया गया।

परियोजनाएँ— १. पाण्डुलिपियों का संग्रह व संरक्षण
२. वेदभाष्य कोष का निर्माण
३. प्रातिशाख्य परिभाषा कोष

४. आठ संस्कृत पाण्डुलिपियों का समीक्षात्मक संपादन

५. शोध पत्रिका का संपादन

इस वर्ष विद्यापीठ से ७ पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

८-३ श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जम्मू

जम्मू एवं कश्मीर के पूर्व महाराज श्री रणवीर सिंह जी के द्वारा संस्थापित श्री रघुनाथ संस्कृत महाविद्यालय का राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नयी दिल्ली ने ०१ अप्रैल, १९७१ को अधिग्रहण किया तथा इसका नाम श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ रखा गया। प्रथमा से आचार्य तक के विद्यार्थी यहाँ विभिन्न विषयों जैसे-साहित्य, न्याय, व्याकरण, फलित ज्योतिष और सर्वदर्शन का अध्ययन करते हैं। संस्कृत अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए १९७९ में शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम आरंभ किया गया। शास्त्री स्तर तक पारम्परिक विषयों के साथ हिन्दी, डोगरी, अंग्रेजी और राजनीतिशास्त्र तथा इतिहास जैसे आधुनिक विषयों को पढ़ाया जाता है।

इस विद्यापीठ को काश्मीर शैव दर्शन कोश तैयार करने के उद्देश्य से कश्मीर शैवदर्शन परियोजना का दायित्व सौंपा गया था।

विद्यापीठ १४-७-१९७१ से किराए के भवन में अपना कार्य कर रहा है। जम्मू और कश्मीर सरकार ने भवन-निर्माण के लिए भलवल में भूमि स्वीकृत की है। भवन के निर्माण का कार्य प्रगति पर है।

प्रवेश

प्रस्तुत वर्ष में विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या निम्नलिखित है:—

कक्षा	छात्र संख्या
प्रथमा-प्रथम वर्ष	६
प्रथमा-द्वितीय वर्ष	४
प्रथमा-तृतीय वर्ष	३
पूर्वमध्यमा-प्रथम वर्ष	२१
पूर्वमध्यमा-द्वितीय वर्ष	७५
उत्तरमध्यमा-प्रथम वर्ष	०५
उत्तरमध्यमा-द्वितीय वर्ष	१०
प्राक्शास्त्री-प्रथम वर्ष	३३
प्राक्शास्त्री-द्वितीय वर्ष	२३
शास्त्री-प्रथम वर्ष	७३
शास्त्री-द्वितीय वर्ष	५०
शास्त्री-तृतीय वर्ष	३०
आचार्य-प्रथम वर्ष	२८
आचार्य-द्वितीय वर्ष	१३
शिक्षाशास्त्री	६०
कुल योग	**४३४**

प्रस्तुत वर्ष में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के १६ विद्यार्थियों को विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिया गया।

इस विद्यापीठ में जम्मू और कश्मीर राज्य के अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, नेपाल आदि अन्य राज्यों से आने वाले विद्यार्थियों को भी प्रवेश दिया जाता है। विद्यापीठ के पास अपना भवन न होने के कारण इसका कार्यालय, पुस्तकालय एवं कक्षाएं किराए के भवन में चलायी जाती हैं। इसी प्रकार छात्रावास भी किराए के भवनों में है। इस वर्ष ४० विद्यार्थियों को छात्रावास की सुविधा उपलब्ध करायी गयी।विद्यापीठ का भवन निर्माणाधीन है।

छात्रवृत्तियां

कक्षा	संख्या
प्रथमा प्रथम वर्ष	५
प्रथमा द्वितीय वर्ष	२
प्रथमा तृतीय वर्ष	२
पूर्वमध्यमा प्रथम वर्ष	१७
पूर्वमध्यमा द्वितीय वर्ष	४
उत्तरमध्यमा प्रथम वर्ष	१
उत्तरमध्यमा द्वितीय वर्ष	५
प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष	२४
प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष	८
शास्त्री प्रथम वर्ष	४८
शास्त्री द्वितीय वर्ष	४०
शास्त्री तृतीय वर्ष	..
आचार्य प्रथम वर्ष व द्वितीय वर्ष	१६
विद्यावारिधि	२५
कुल योग	—
	१९७

परिणाम

प्रस्तुत वर्ष में विद्यापीठ की विभिन्न परीक्षाओं का परिणाम इस प्रकार रहा—

कक्षा	प्रतिशत
प्रथमा-प्रथम वर्ष	६६%
द्वितीय वर्ष	८०%
तृतीय वर्ष	१००%

पूर्वमध्यमा-प्रथम वर्ष	९२%
द्वितीय वर्ष	८२%
उत्तरमध्यमा-प्रथम वर्ष	१००%
द्वितीय वर्ष	८०%
प्राक्शास्त्री-प्रथम वर्ष	७६.२५%
द्वितीय वर्ष	८३.६०%
शास्त्री-प्रथम वर्ष	७३%
द्वितीय वर्ष	८५%
तृतीय वर्ष	९३%
आचार्य- ज्योतिष साहित्य दर्शन	८८%
(व्याकरण)	८३%
शिक्षाशास्त्री	१००%

८-४ गुरुवायूर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरानाटुकरा, त्रिचूर

गुरुवायूर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जो संस्थान द्वारा अधिग्रहण से पूर्व साहित्यदीपिका संस्कृत विद्यापीठ के नाम से जाना जाता था, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा संचालित आठ विद्यापीठों में से एक है। शैक्षिक सत्र २००१-२००२ में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या इस प्रकार है:—

कक्षा	विद्यार्थियों की संख्या
प्राक्शास्त्री-प्रथम वर्ष	६०
प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष	५९
शास्त्री-प्रथम वर्ष	४६
शास्त्री-द्वितीय वर्ष	३३
शास्त्री-तृतीय वर्ष	२२
आचार्य-प्रथम वर्ष	२९
आचार्य-द्वितीय वर्ष	१२
शिक्षाशास्त्री	६०
विद्यावारिधि	०४
कुल योग	३२५

छात्रवृत्ति

विभिन्न कक्षाओं में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को दी गई छात्रवृत्तियों की संख्या इस प्रकार है:—

कक्षा	विद्यार्थियों की संख्या
प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष	३०
प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष	३०
शास्त्री प्रथम वर्ष	३५
शास्त्री द्वितीय वर्ष	१९
शास्त्री तृतीय वर्ष	१७
आचार्य प्रथम वर्ष	२२
आचार्य द्वितीय वर्ष	१०
शिक्षाशास्त्री	३०
विद्यावारिधि	०४
कुल योग	१९७

इस वर्ष अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के ४० छात्रों ने विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश लिया।

परिणाम

प्रकृत वर्ष में विद्यापीठ की विभिन्न परीक्षाओं के परिणाम इस प्रकार रहे—

कक्षा	प्रतिशत
प्राक्शास्त्री-प्रथम वर्ष	९८%
द्वितीय वर्ष	१००%
शास्त्री-प्रथम वर्ष	९७%
द्वितीय वर्ष	१००%
तृतीय वर्ष	९६%
आचार्य-प्रथम वर्ष	१००%
द्वितीय वर्ष	१००%
शिक्षाशास्त्री	१००%

इस वर्ष अनुसूचित जाति/जनजाति के ४४ विद्यार्थियों को विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश दिया गया।

८-५ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जयपुर

यह विद्यापीठ राजस्थान संस्कृत अकादमी की संस्तुतियों के आधार पर राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री के द्वारा तत्कालीन शिक्षामंत्री, भारत सरकार को किए गए अनुरोध के फलस्वरूप मई १९८३ में संस्थापित किया गया। वर्तमान में इस विद्यापीठ में तीन विभाग हैं:—

१. शोध एवं प्रकाशन

२. शास्त्री, आचार्य विभाग

३. प्रशिक्षण विभाग

प्रस्तुत वर्ष में क्रियाकलापों का विवरण इस प्रकार है:—

प्रवेश

कक्षा	छात्र संख्या
प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष	२५
प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष	२०
शास्त्री प्रथम वर्ष	६०
शास्त्री द्वितीय वर्ष	५७
शास्त्री तृतीय वर्ष	४६
आचार्य प्रथम वर्ष	४९
आचार्य द्वितीय वर्ष	३२
शिक्षाशास्त्री	६३
कुल योग	३५२

छात्रवृत्ति का विवरण

कक्षा	संख्या
प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष	२४
प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष	१८
शास्त्री प्रथम वर्ष	५३
शास्त्री द्वितीय वर्ष	५६
शास्त्री तृतीय वर्ष	४५

आचार्य प्रथम वर्ष	४३
आचार्य द्वितीय वर्ष	२६
शिक्षाशास्त्री	३०
कुल योग	२९५

परिणाम

इस वर्ष विद्यापीठ की विभिन्न परीक्षाओं के परिणाम इस प्रकार रहे—

कक्षा	प्रतिशत
प्राक्शास्त्री-प्रथम वर्ष	६८%
द्वितीय वर्ष	१००%
शास्त्री-प्रथम वर्ष	८६.६६%
द्वितीय वर्ष	९२.९८%
तृतीय वर्ष	१००%
आचार्य-प्रथम वर्ष	८१.६३%
द्वितीय वर्ष	९०.६२%
शिक्षाशास्त्री	९०.४७%

इस वर्ष अनुसूचित/जनजाति के २३ विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया। ५६ विद्यार्थियों ने होस्टल की सुविधा प्राप्त की।

८-६ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, लखनऊ

प्रवेश

२००१-२००२ शैक्षिक वर्ष में इस विद्यापीठ में छात्रों के प्रवेश का विवरण निम्नलिखित है:—

कक्षा	विद्यार्थियों की संख्या
प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष	१३
प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष	०८
शास्त्री प्रथम वर्ष	१९
शास्त्री द्वितीय वर्ष	१५
शास्त्री तृतीय वर्ष	०९

आचार्य-प्रथमवर्ष	४१
आचार्य द्वितीय वर्ष	१२
शिक्षाशास्त्री	६२
कुलयोग	१७९

छात्रवृत्ति

प्रस्तुत वर्ष में छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का विवरण इस प्रकार है:—

कक्षा	विद्यार्थियों की संख्या
प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष	०८
प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष	०४
शास्त्री प्रथम वर्ष	१०
शास्त्री द्वितीय वर्ष	०७
शास्त्री तृतीय वर्ष	०५
आचार्य प्रथम वर्ष	२७
आचार्य द्वितीय वर्ष	०८
शिक्षाशास्त्री	३०
कुल योग	९१

इस वर्ष अनुसूचित जाति/जनजाति व पिछड़ी जाति के २२ विद्यार्थियों को प्रवेश दिया गया। ४२ महिला छात्रों को भी प्रवेश किया गया।इस वर्ष ५४ विद्यार्थियों को छात्रावास की सुविधा प्रदान की गयी।

परिणाम

इस वर्ष विद्यापीठ की वार्षिक परीक्षाओं के परिणाम इस प्रकार रहे—

कक्षा	प्रतिशत
प्राक्शास्त्री-प्रथम वर्ष	१०० %
द्वितीय वर्ष	१००%
शास्त्री-प्रथम वर्ष	९८%
द्वितीय वर्ष	१००%
तृतीय वर्ष	१००%

आचार्य-प्रथम वर्ष	१००%
द्वितीय वर्ष	९९%
शिक्षाशास्त्री	१००%

८-७ राजीव गांधी केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, शृंगेरी

शृंगेरी में मानव संसाधन विकास मंत्री की उपस्थिति में दिनांक ५-३-१९९२ को भारत के राष्ट्रपति के द्वारा राजीव गांधी केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ का उद्घाटन किया गया। विद्यापीठ शृंगेरी मठ के किराए के एक भवन में कार्यरत है।

प्रवेश

वर्ष २००१-२००२ में विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या इस प्रकार रही :

कक्षा	छात्रसंख्या
प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष	१८
प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष	०४
शास्त्री प्रथम वर्ष	०९
शास्त्री द्वितीय वर्ष	०३
शास्त्री तृतीय वर्ष	११
आचार्य प्रथम वर्ष	०५
आचार्य द्वितीय वर्ष	०६
शिक्षाशास्त्री	६०
कुल योग	१०६

छात्रवृत्ति

वर्ष में छात्रवृत्ति पाने वाले छात्रों की संख्या इस प्रकार है;—

कक्षा	छात्रसंख्या
प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष	१८५
प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष	०४
शास्त्री प्रथम वर्ष	०९
शास्त्री द्वितीय वर्ष	०३
शास्त्री तृतीय वर्ष	०१

आचार्य प्रथम वर्ष	०५
आचार्य द्वितीय वर्ष	०६
शिक्षाशास्त्री	३०
कुल योग	७६

इस वर्ष १८ विद्यार्थियों को छात्रावास की सुविधा-प्रदान की गई और अनुसूचित जाति/जनजाति के १० छात्रों को प्रवेश दिया गया। १४ महिला छात्राओं को इस वर्ष प्रवेश दिया गया।

८.८ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, गरली

भारतीय स्वाधीनता के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में दिनांक १६ सितम्बर १९९७ को हिमाचल प्रदेश में कालेश्वर के निकट ग्राम गरली जिला कांगड़ा में आठवें केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ का उद्घाटन तत्कालीन शिक्षाराज्यमन्त्री, भारत सरकार माननीय श्रीमुहीराम सैकिया के द्वारा किया गया। यह विद्यापीठ सम्प्रति किराए के भवन में चल रहा है। यहां प्राक्शास्त्री से लेकर आचार्य उपाधि पर्यन्त पठन-पाठन की व्यवस्था है।

प्रवेश

वर्ष २०००-२००१ में विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश लेने वाले छात्रों की संख्या इस प्रकार रही:—

कक्षा	छात्रसंख्या
प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष	४७
प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष	४२
शास्त्री प्रथम वर्ष	४८
शास्त्री द्वितीय वर्ष	४७
शास्त्री तृतीय वर्ष	४०
आचार्य प्रथम वर्ष	२२
आचार्य द्वितीय वर्ष	०९
विद्यावारिधि	०२
कुल योग	१९४

छात्रवृत्ति

कक्षा	छात्रसंख्या
प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष	४०
प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष	—
शास्त्री प्रथम वर्ष	३८
शास्त्री द्वितीय वर्ष	३४
शास्त्री तृतीय वर्ष	२४
आचार्य प्रथमवर्ष	१७
आचार्य द्वितीय वर्ष	०८
कुल योग	१६१

अनुसूचित जाति/जनजाति के छः छात्रों को सत्र २०००-२००१ में विद्यापीठ में प्रवेश दिया गया।

परिणाम

इस वर्ष विद्यापीठ के परिक्षाओं के परिणाम इस प्रकार रहे—

कक्षा	प्रतिशत
प्राक्शास्त्री-प्रथम वर्ष	
शास्त्री प्रथम	—
शास्त्री द्वितीय	९६%
शास्त्री तृतीय	९९%
आचार्य प्रथम	१००%
आचार्य द्वितीय	१००%
	१००%

वर्ष की प्रमुख गतिविधियाँ

९.१ 'स्वयं संस्कृत सीखें' के प्रथम स्तर की सामग्री का लोकार्पण

संस्थान ने संस्कृत स्वशिक्षण के लिए पञ्चस्तरीय सामग्री निर्माण का कार्य अङ्गीकृत किया है। प्रथम स्तर की पाठ्य सामग्री ९०० पृष्ठों में इस वर्ष प्रकाशित हुई। इसका लोकार्पण डॉ० मुरली मनोहर जोशी, मन्त्री, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय ने दि० २७.३.२००२ को किया। इस अवसर पर संस्थान के साधारण सभा एवं शासी परिषद् के सभी सदस्य भी उपस्थित थे।

बायें से दायें श्रीमती बेला बैनर्जी, प्रो० हर्षित भाई जोशी, माननीय मन्त्री, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय डॉ० मुरली मनोहर जोशी, प्रो० वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, श्री एन० गोपालस्वामी तथा श्री वी०के० पीपरसोनिया, वित्त सलाहकार, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय

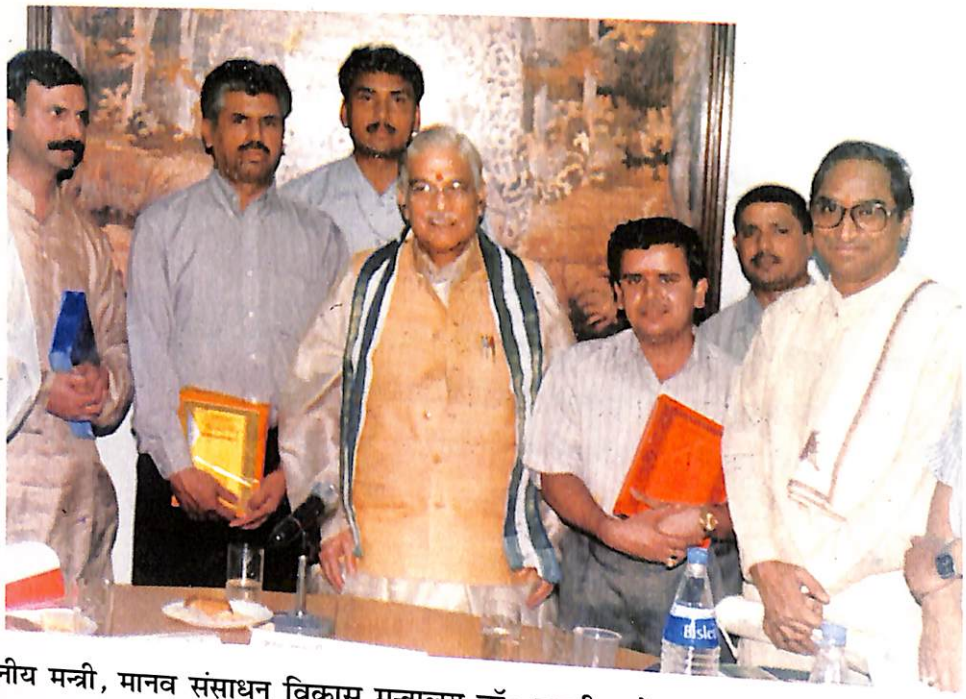

माननीय मन्त्री, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय डॉ० मुरली मनोहर जोशी 'स्वयं संस्कृत सीखें' प्रथम स्तर की पुस्तक को लोकार्पण समारोह के अवसर पर।

९.२ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा गठित उच्चस्तरीय समिति का आगमन

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान को मानित विश्वविद्यालय घोषित किए जाने के सम्बन्ध में दि० २९.०१.२००२ से २.३.२००२ तक उच्चस्तरीय समिति ने संस्थान के अङ्गभूत विद्यापीठों एवं मुख्यालय का दौरा किया। यह समिति विश्व विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा गठित की गई थी जिसके सदस्य विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति तथा प्रतिष्ठित विद्वान् थे।

विश्वविद्यालय की उच्चस्तरीय समिति शृङ्गेरी परिसर में बायें से–एच०एच० श्री० जगद्गुरु शङ्कराचार्य, भारतीतीर्थ महास्वामी जी दक्षिणाम्नाय श्री शारदापीठम्, शृङ्गेरी, प्रो० देवेन्द्र मिश्र, श्रीमती पङ्कज मित्तल, प्रो० सुरेश्वर शर्मा, प्रो० वेम्पटिकुटम्ब शास्त्री, प्रो० कपिल कपूर तथा प्रो० ए०सी० सारङ्गी।

विश्वविद्यालय की उच्चस्तरीय समिति गरली परिसर में बायें से--श्री धर्मवीरसिंह राजपूत, श्री डी०डी० मेहता, प्रो० के०एन० पाठक, प्रो० वी० एन्० झा, डॉ० हिन्द केसरी तथा अन्य।

विश्वविद्यालय की उच्चस्तरीय समिति जयपुर परिसर में बायें से–प्रो० सुरेश्वर शर्मा, प्रो० ए०सी० सारङ्गी, प्रो० देवेन्द्र मिश्र, डॉ० आर०के० शुक्ल, प्राचार्य, प्रो० वेम्पटिकुटम्ब शास्त्री, श्रीमती पङ्कज मित्तल तथा अन्य।

विश्वविद्यालय की उच्चस्तरीय समिति इलाहबाद परिसर में दायें से–श्री० डी० डी० मेहता, डॉ० वी० आर० पञ्चमुखी, प्रो० वी०एन्० झा, प्रो० वेम्पटिकुटम्ब शास्त्री, श्री गोपराजु राम, प्राचार्य तथा श्री धर्मवीरसिंह राजपूत।

विश्वविद्यालय की उच्चस्तरीय समिति लखनउ परिसर में बायें से–डॉ० वी० आर० पञ्चमुखी, प्रो० वेम्पटिकुटम्ब शास्त्री, श्री० डी० डी० मेहता तथा अन्य।

विश्वविद्यालय की उच्चस्तरीय समिति पुरी परिसर में दायें से–प्रो० ए०सी० सारङ्गी, प्रो० सुरेश्वर शर्मा, प्रो० देवेन्द्र मिश्र, प्रो० वेम्पटिकुटम्ब शास्त्री, डॉ० वी० पी० हिमांशु, प्राचार्य तथा श्रीमती पङ्कज मित्तल।

विश्वविद्यालय की उच्चस्तरीय समिति गुरुवायूर परिसर में बायें से– प्रो० सुरेश्वर शर्मा, श्रीमती पङ्कज मित्तल, डॉ० एन०आर० कान्न, प्राचार्य, प्रो० देवेन्द्र मिश्र, प्रो० ए०सी० सारङ्गी, प्रो० वेम्पटिकुटम्ब शास्त्री, प्रो० कपिल कपूर तथा अन्य।

विश्वविद्यालय की उच्चस्तरीय समिति जम्मू परिसर में बायें से–प्रो० के० एन० पाठक, डॉ० वी० आर० पञ्चमुखी, डॉ० वी० एन० झा, प्रो० वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री, श्री डी० डी० मेहता, डॉ० पी० सी० शास्त्री, प्रचार्य एवं अन्य।

९.३ संस्कृतसप्ताहोत्सव

इस वर्ष २००१ से ७ अगस्त २००१ तक सप्ताह पर्यवसायी संस्कृतसप्ताहोत्सव का आयोजन किया गया। इस दौरान अनेक प्रकार की शैक्षिक प्रतियोगिताएँ संस्थान मुख्यालय तथा अङ्गभूत विद्यापीठों में आयोजित किये गये।

इस सप्ताहोत्सव का उद्घाटन संस्थान परिसर में १ अगस्त २००१ को प्रो० अवनीन्द्र कुमार, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा सम्पन्न हुआ। संस्कृत सप्ताह के अन्तर्गत ४ अगस्त श्रावणीपूर्णिमा को संस्कृत दिवस के रूप में मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, श्री लालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ तथा राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान द्वारा संयुक्त रूप से मनाया गया। यह कार्यक्रम राष्ट्रिय संग्रहालय नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ० सरोजिनी महिषी, उपाध्यक्ष, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने की। डॉ० के० वेंकटसुब्रमणियन्, सदस्य योजना आयोग, भारत शासन समारोह के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर डॉ० वी० आर० पञ्चमुखी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति ने सारस्वतातिथि के रूप में समारोह की गरिमा बढ़ाई। श्रीमती बेला बैनर्जी, संयुक्त सचिव (भाषाएँ) ने भी समारोह में सहभागिता की।

संस्कृत सप्ताहोत्सव के उद्घाटन समारोह में उपस्थित प्रो० अवनीन्द्र कुमार, डॉ० सरोजिनी महिषी, प्रो० वे० कुटम्ब शास्त्री तथा अन्य अधिकारीगण।

संस्कृत दिवस के समारोह के अवसर पर बायें से : प्रो० रमेश चतुर्वेदी, श्रीमती बेला बैनर्जी, डॉ० सरोजिनी महिषी, डॉ० वी आर० पञ्चमुखी तथा प्रो० वे० कुटुम्बशास्त्री

इस सप्ताहोत्सव का समापन समारोह संस्थान परिसर में ७ अगस्त, २००१ को सम्पन्न हुआ तथा इसी अवसर पर विभिन्न शैक्षिक प्रतियोगिताओं में विजयी छात्रों को पुरस्कार भी प्रदान किया गया। डॉ० सरोजिनी महिषी, उपाध्यक्ष, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने समारोह की अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो० आद्याचरण झा तथा डॉ० आई० पाण्डुरङ्ग राव, पूर्व अध्यक्ष, सङ्घ लोक सेवा आयोग सारस्वत अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। प्रो० वे० कुटुम्बशास्त्री ने समारोह में उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। श्रीमती बेला बैनर्जी ने समारोह में उपस्थित होकर गरिमा बढ़ाई।

संस्कृत सप्ताहोत्सव के समापन समारोह का एक दृश्य

९.४ स्थापना दिवस समारोह

१९ अक्टूबर २००१ को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान का स्थापना दिवस समारोह मनाया गया। इस समारोह के अध्यक्ष श्री नी० गोपालस्वामी, उपाध्यक्ष, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान थे। इस अवसर को हिन्दी दिवस के रूप में भी मनाया गया तथा १४-२० सितम्बर, २००१ तक चले हिन्दी पखवाड़े के दौरान संस्थान के कर्मचारियों के मध्य आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्री नी० गोपालस्वामी, उपाध्यक्ष राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान पुरस्कार वितरित करते हुए।

९.५ केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग की बैठक

डॉ० सरोजिनी महिषी, उपाध्यक्ष, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की अध्यक्षता में दिनाङ्क २९.६.२००१ तथा दिनाङ्क १०.८. २००१ को केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों के साथ दो बैठकें राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के अङ्गभूत विभिन्न विद्यापीठों के निर्माणाधीन भवनों की प्रगति के सम्बन्ध में सम्पन्न हुई। श्री किशन कुमार, महानिदेशक, डॉ० ए० वी० चतुर्वेदी अतिरिक्त महानिदेशक (निर्माण) के.लो.नि.वि., श्री पी० सौन्दरराज, उपमहानिदेशक (निर्माण) के.लो.नि.वि., नई दिल्ली, प्रो० वे० कुटुम्बशास्त्री, निदेशक, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान तथा अन्य अधिकारी गण इन बैठकों में उपस्थित रहे।

२९.६.२००१ को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान में सम्पन्न केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग की बैठक।

१०.८.२००१ को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान में सम्पन्न केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग की बैठक।

९.६ इन्टरनेट पर आरम्भ किये जाने वाले योजना का उद्घाटन

श्री बी० के० चतुर्वेदी, शिक्षासचिव, भारत शासन ने अपने शुभागमन के अवसर पर "सामग्री समुत्पाद" शीर्षक से इन्टरनेट में आरम्भ किये जाने वाले योजना का उद्घाटन दिनाङ्क १८.३.२००२ को संस्थान के कम्प्यूटर कक्ष में सम्पन्न किया। इस योजना का उद्देश्य इन्टरनेट पर संस्कृत सीखने वाले जिज्ञासुओं के लिए अनेक प्रकार के उपकरण उपलब्ध कराना है। श्रीमती बेला बैनर्जी, संयुक्त सचिव (भाषाएँ) भी इस अवसर पर उपस्थित थीं।

'सामग्री-समुत्पाद' योजना का उद्घाटन करते हुए श्री बी० के० चतुर्वेदी, शिक्षा सचिव, भारत सरकार

श्री बी० के० चतुर्वेदी, श्रीमती बेला बैनर्जी, संयुक्त सचिव (भाषाएँ) तथा प्रो० वे० कुटुम्बशास्त्री, निदेशक, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान २८.३.२००२ की बैठक में चर्चा करते हुए।

९.७ अखिल भारतीय शास्त्रीय प्रतियोगिता

दिनांङ्क २८.१२.२००१ से ३०.१२.२००१ तक श्री राजीव गाँधी केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, शृङ्गेरी, कर्नाटक में अखिल भारतीय शास्त्रीय प्रतियोगिता आयोजित हुई। इस अवसर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष के प्रतिभागियों ने आठ शास्त्रों एवं समस्या पूर्ति, श्लोकान्त्याक्षरी तथा शलाका परीक्षा की प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

इसका उद्घाटन अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु शङ्कराचार्य भारतीतीर्थ महास्वामी जी, दक्षिणाम्नाय श्री शारदापीठ, शृङ्गेरी द्वारा सम्पन्न हुआ। डॉ० सत्यव्रत शास्त्री, पूर्व उपकुलपति, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु शङ्कराचार्य भारतीतीर्थ महास्वामी जी, दक्षिणाम्नाय श्री शारदापीठ, शृङ्गेरी ने कृपा पूर्वक सम्पूर्ण समारोह की अध्यक्षता की। श्री नी० गोपालस्वामी, उपाध्यक्ष, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान इस समारोह के सारस्वत अतिथि थे। संस्थान के निदेशक प्रो० वे० कुटुम्बशास्त्री ने उद्घाटन एवं समापन के अवसरो पर उपस्थित अतिथियों को स्वागत किया।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी छात्रों को स्वर्ण, रजत तथा कांस्य पदक प्रदान किये गये साथ ही राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के प्रथमा से आचार्य तक के विभिन्न कक्षाओं के लिए २००१ में आयोजित वार्षिक परीक्षा में सर्वोच्च अंक पाने वाले छात्रों को भी पदक प्रदान किये गये। "पद्मभूषण करमशी जेठाभाई सोमैया संस्कृत शलाका स्पर्धा पारितोषिक" नाम से विशेष पुरस्कार भी विजेताओं को प्रदान किया गया।

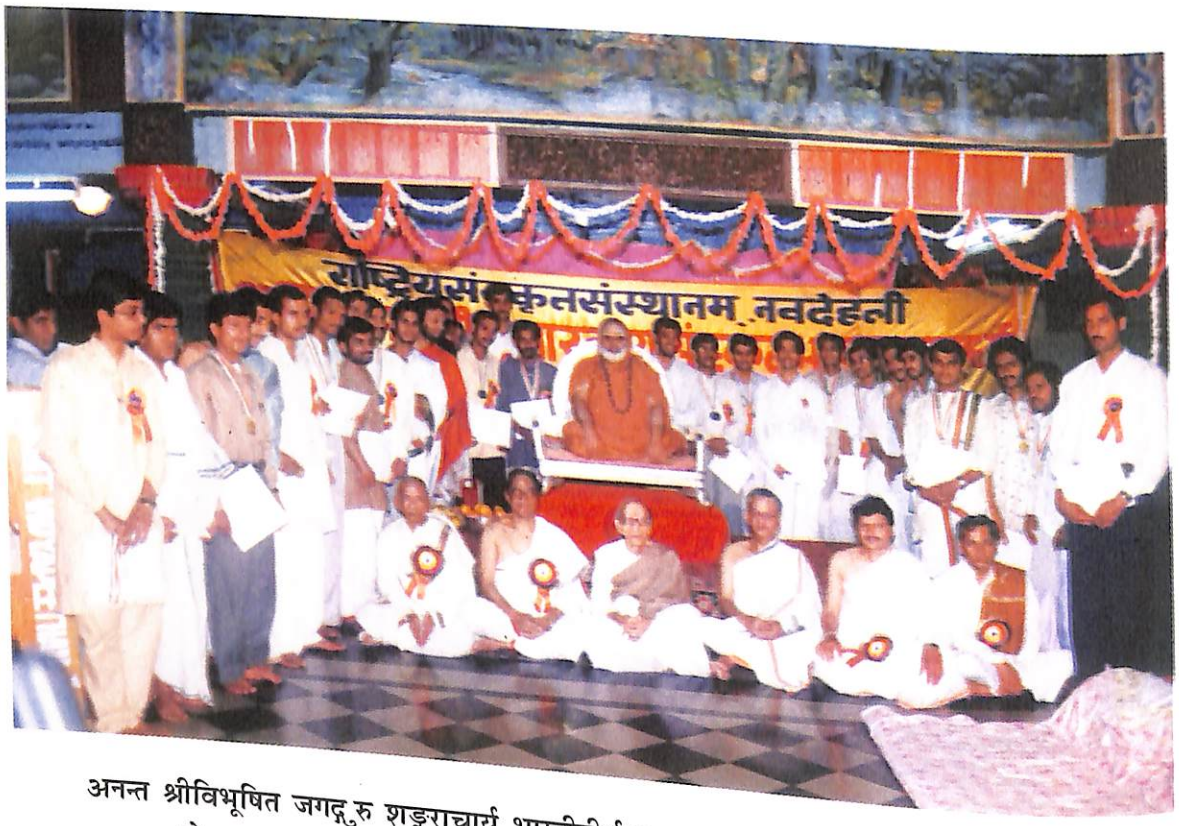

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु शङ्कराचार्य भारतीतीर्थ महास्वामी जी, प्रो० वे० कुटुम्बशास्त्री, प्रो० सत्यव्रत शास्त्री, श्री नी० गोपालस्वामी तथा छात्र एवं विद्वत्परिषद्।

९.८ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियोजन समिति की बैठक

प्रो० वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री की अध्यक्षता में दि० १८ जनवरी, २००२ को संस्थान मुख्यालय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियोजन समिति की बैठक सम्पन्न हुई। इस बैठक में प्रो० एन० सी० गौतम, कुलाधिपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर, प्रो० जी०सी० सक्सैना, कुलाधिपति, डा० भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा, प्रो० वासुदेव घुषे, श्री लालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ, नई दिल्ली, प्रो० शुकदेव चतुर्वेदी, श्री लालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रिय-संस्कृतविद्यापीठ, नई दिल्ली, श्रीमती पंकज मित्तल, उपसचिव, यू०जी०सी० तथा अन्य अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियोजन समिति की बैठक का दृश्य।

९.९ दूरस्थ शिक्षण की कार्यशाला

प्रस्तुत वर्ष में दूरस्थ शिक्षण के लिए २ कार्यशालाएँ क्रमशः ७.६.२००१–१२.६.२००१ तक राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली में तथा ११.३.२००२ से २०.३.२००२ तक बैंगलोर में आयोजित हुई। इनमें 'स्वयं संस्कृत सीखें' के द्वितीय एवं तृतीय स्तर की सामग्री का प्रारूप बना। इसमें अग्रलिखित विद्वानों में प्रतिभागिता की:–

प्रो० वेम्पटिकुटम्ब शास्त्री, निदेशक, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान– चेयरमेन, प्रो० के०वी० रामाकृष्णाचार्युलु (तिरुपति), श्री चमूकृष्ण शास्त्री (दिल्ली), प्रो० श्रीधर वशिष्ठ (दिल्ली), डॉ० सी०के० सरोज (दिल्ली), डॉ० शशि प्रभा गोयल (दिल्ली), श्री आर० देवनाथन् (तिरुपति), डॉ० बनमाली बिस्वाल (इलाहाबाद), डॉ० विस्वास (बैंगलोर), डॉ० वाई० एस० रमेश (दिल्ली), डॉ० एस०के० सेनापति (दिल्ली), डॉ० हिन्द केसरी (गरली), डॉ० जगतनारायण पाण्डेय (जयपुर), डॉ० आजाद मिश्र (लखनऊ), डॉ० दुर्गा दत्त पाण्डेय (लखनऊ), डॉ० जनार्दन हेगड़े (बंगलौर), डॉ० केवलकिष्ण शास्त्री (जम्मू), डॉ० विश्वमूर्ति शास्त्री (जम्मू), डॉ० रामचन्द्र शास्त्री (जम्मू), डॉ० अर्कनाथ चौधरी (जयपुर), डॉ० बटोही झा (लखनऊ), डॉ० सुरेश कुमार शर्मा (जयपुर), डॉ० रामलखन पाण्डेय (गरली), डॉ० प्रकाश पाण्डेय (दिल्ली), डॉ० उपेन्द्र राव (पुरी), डॉ० एल०एन० पाण्डेय (लखनऊ), डॉ० वैद्यनाथ झा (जम्मू), डॉ० हरे राम त्रिपाठी (जम्मू), डॉ० गणेश शंकर विद्यार्थी (लखनऊ), डॉ० श्रीधर मिश्र (जम्मू), डॉ० बोध कुमार झा (जम्मू), डॉ० सत्य नारायण आचार्य (पुरी), डॉ० रामाकान्त मिश्र (शृङ्गेरी), डॉ० पंकज (बैंगलोर), डॉ० शान्तला (बैंगलोर), श्रीमति सुचेता (बैंगलोर) तथा डॉ० एल०के० त्रिपाठी (दिल्ली)–समन्वायक।

दूरस्थ शिक्षण की कार्यशाला ७-१२ जून २००१ तक, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली में।

कार्यशाला ११-२० मार्च २००२ तक, बैंगलोर में।

९.१० शोध प्रविधि एवं मातृकाविज्ञान का प्रशिक्षणशिविर

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने भोगीलाल लेहरचन्द प्राच्यविद्या संस्थान के सहयोग से दि० १८.२.२००२ से १३.३.२००२ तक शोध प्रविधि एवं मातृकाविज्ञान के प्रशिक्षणशिविर का आयोजन किया। इस शिविर का उद्घाटन श्री नी० गोपालस्वामी, उपाध्यक्ष, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने किया। इस शिविर में देश के प्रख्यात विषय विशेषज्ञों ने ४० वरीय शोधछात्रों को प्रशिक्षण प्रदान किया। सभी प्रतिभागी छात्रों ने संस्थान के विभिन्न परिसरों से आकर ग्रन्थ संपादन शास्त्र एवं आधुनिक शोध प्रविधि का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

उद्घाटन के अवसर पर श्री वी०पी० जैन, श्री एन० गोपालस्वामी, प्रो० वी० कुटुम्ब शास्त्री तथा डॉ० प्रकाश पाण्डेय।

९.११ संस्कृत छात्रों की जिलास्तरीय संस्कृत प्रतियोगिताएँ

इस वर्ष राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने देश के विभिन्न प्रान्तों से चुने हुए १०० जिलों के विद्यालयों को संस्कृत छात्रों की प्रतियोगिताएँ आयोजित करने के लिए रु० ७०००.०० प्रति विद्यालय का अनुदान प्रदान किया।

९.१२ शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने विश्व संस्कृत प्रतिष्ठान, त्रिचुर एवं शिशु शिक्षा समिति, गुवाहाटी आसाम के सहयोग से अखिल भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। इसमें देश भर से आए शिक्षकों ने संस्कृत अध्यापन का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

९.१३ पुनर्मुद्रण योजना में पुस्तकों का प्रकाशन

इस वर्ष राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने ५१ अति दुर्लभ पुस्तकों का 'दुर्लभ पुस्तकों के पुनर्मुद्रण योजना' के अन्तर्गत प्रकाशन किया। ये सभी पुस्तकें विद्वानों को अत्यल्प मूल्य पर उपलब्ध हैं।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली

साधारण सभा के सदस्यों की सूची

१.	डॉ० मुरली मनोहर जोशी मानव संसाधन विकास मन्त्री, भारत सरकार	अध्यक्ष
२.	श्री एन्. गोपालस्वामी महासचिव, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, सरदार पटेल भवन, पटेल चौक, नई दिल्ली	सदस्य
३.	श्रीमती बेला बैनर्जी संयुक्त सचिव, (भाषाएँ) मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली	सदस्य
४.	श्री वी०के० पीपरसेनीया वित्तीय सलाहकार, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली	सदस्य
५.	डॉ० कमलेश दत्त त्रिपाठी ४३९, महामना मालवीय नगर, (नजदीक भारती भवन लायब्रेरी) इलाहबाद-३	सदस्य
६.	श्री श्रीकृष्ण सेमवाल सचिव दिल्ली संस्कृत अकादमी, प्लाट संख्या-५, झण्डेवालान विस्तार करोल बाग, नई दिल्ली	सदस्य
७.	श्री चमूकृष्ण शास्त्री अखिल भारतीय संगठन मन्त्री संस्कृत भारती, माता मन्दिर गली, झण्डेवालान, नई दिल्ली	सदस्य

८. डॉ० गणेश भारद्वाज — सदस्य
रीडर (संस्कृत)
पंजाब विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय आवास,
उना रोड, होशियारपुर (पंजाब)

९. श्री सुभाष विद्यालंकार — सदस्य
डी-६, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली

१०. डॉ० के० वी० रामकृष्णमाचारुलु — सदस्य
व्याकरण व्याख्याता,
राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति

११. डॉ० राजेन्द्र मिश्र — सदस्य
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
हिमाचल विश्वविद्यालय, (शिमला)

१२. डॉ० वी०आर० पंचमुखी — सदस्य
चेयरमैन, आई०सी०एस०एस०आर०,
पी०ओ०बॉक्स—१०५२८
अरुणा आसफ अली मार्ग, नई दिल्ली

१३. प्रो० एन० एस० रामानुजा ताताचार्य — सदस्य
पूर्व उपकुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ,
तिरुपति

१४. प्रो० एस० एन० डे — सदस्य
संस्कृत विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
त्रिपुरा

१५. प्रो० एस० शंकरनारायणा — सदस्य
न्याय शिरोमणि अतिथि गृह,
श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्व महाविद्यालय परिसर,
इनाथुर, कॉञ्चीपुरम

१६. डॉ० शरतावधानी डी० प्रभाकर शर्मा — सदस्य
प्राचार्य, संस्कृत कालेज कोवयूर, पश्चिम गोदावरी जिला,
आन्ध्र प्रदेश

१७. डॉ० चंद्रभूषण पांडे — सदस्य
संस्कृत साहित्य अकादमी, पुराना विधान सभा भवन
नया टाउन हाल, सैक्टर-१६, गांधी नगर, गुरजात

१८.	डॉ० (श्रीमती) एस० आर० लीला एन०एम०के०आर०वी० कॉलेज जयानगर, बैंगलोर (गुजरात)	सदस्य
१९.	प्रो० हर्षित भाई जोषी योगी अमृत, २४/४, नूतन भारत सोसाइटी, अल्कापुरी, बड़ौदा	सदस्य
२०.	श्री एन०आर० कुमार मैनेजमैंट सलाहकार, १०, देवाशिक्षामणि रोड, रोयापीठ, चैन्नई-६०००१४	सदस्य
२१.	प्रो० सीतानाथ गोस्वामी रिटायर्ड, संस्कृत विभागाध्यक्ष, जादवपुर विश्वविद्यालय, ६३/१-ए, सीलमपुर लेन, कोलकाता	सदस्य
२२.	डॉ० चंद्रगुप्त वारेनकर संस्कृत भाषा प्रचारिणि सभा संस्कृत भवनम् नं० २, पश्चिमि हाई कोर्ट रोड, नागपुर	सदस्य
२३.	डॉ० एन० आर० कन्नन प्राचार्य, गुरुवायूर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरनाटुकरा, जि० त्रिचुर, केरला-६८०५५१	सदस्य
२४.	डॉ० वी०पी० हिमांशु प्राचार्य, श्री सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरी-१	सदस्य
२५.	डॉ० हिन्द केसरी प्राचार्य, केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ वी०पी०ओ० गरली, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश-१७७१०८	सदस्य
२६.	प्रो० वेम्पटिकुटुम्ब शास्त्री निदेशक, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ५६-५७, इन्स्टीट्यूशन एरिया, जनकपुरी नई दिल्ली-११००५८	सदस्य

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

शासी परिषद् के सदस्यों की सूची

(दिनांक १९.९.२००१ से लागू)

१.	डॉ० मुरली मनोहर जोशी मानव संसाधन विकास मन्त्री, भारत सरकार	अध्यक्ष
२.	श्री एन्. गोपालास्वामी महासचिव, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, सरदार पटेल भवन, पटेल चौक, नई दिल्ली	सदस्य
३.	श्रीमती बेला बैनर्जी संयुक्त सचिव, (भाषाएँ) मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली	सदस्य
४.	श्री वी०के० पीपरसेनीया वित्तीय सलाहकार, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली	सदस्य
५.	डॉ० कमलेश दत्त त्रिपाठी ४३९, महामना मालवीय नगर, (नजदीक भारती भवन लायब्रेरी) इलाहबाद-३	सदस्य
६.	श्री श्रीकृष्ण सेमवाल सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी, प्लाट संख्या-५, झण्डेवालान विस्तार करोल बाग, नई दिल्ली	सदस्य
७.	श्री चमूकृष्ण शास्त्री अखिल भारतीय संगठन मन्त्री संस्कृत भारती, माता मन्दिर गली, झण्डेवालान, नई दिल्ली	सदस्य

८.	डॉ० गणेश भारद्वाज रीडर (संस्कृत) पंजाब विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय आवास, उना रोड, होशियारपुर (पंजाब)	सदस्य
९.	श्री सुभाष विद्यालंकार डी-६, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली	सदस्य
१०.	डॉ० के० वी० रामकृष्णमाचारुलु व्याकरण व्याख्याता, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति	सदस्य
११.	डॉ० राजेन्द्र मिश्र प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, हिमाचल विश्वविद्यालय, (शिमला)	सदस्य
१२.	प्रो० वेम्पटिकुटुम्ब शास्त्री निदेशक, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ५६-५७, इन्स्टीट्यूशन एरिया, जनकपुरी नई दिल्ली-११००५८	सदस्य

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(१) स्थायी रूप से सम्बद्ध संस्थाएं

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
१.	लक्ष्मी देवी सर्राफ आदर्श संस्कृत महाविद्यालय काली रेखा वैद्यनाथ धाम देवधर (झारखण्ड)	प्राक्शास्त्री शास्त्री आचार्य
२.	आर्यकन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर नयी दिल्ली	प्रथमा पूर्वमध्यमा उत्तर मध्यमा शास्त्री
३.	श्री समन्तभद्र संस्कृत महाविद्यालय दरियागंज नई दिल्ली	प्रथमा पूर्वमध्यमा उत्तर मध्यमा प्राक्शास्त्री शास्त्री आचार्य
४.	कालीकट आदर्श संस्कृत विद्यापीठ पोस्ट आफिस बालूसरी जिला कालीकट, (केरल)	प्राक्शास्त्री शास्त्री आचार्य
५.	कोडांगलूर विद्यापीठ पैलेस रोड, पो० कोडांगलूर जिला-त्रिचूर (केरल)	प्राक्शास्त्री शास्त्री आचार्य
६.	श्री शंकर संस्कृत विद्यापीठम् पो० इडाक्काडम, इजहूकेन, क्वीलोन, केरल केरल	पूर्वमध्यमा उत्तरमध्यमा शास्त्री प्राक्शास्त्री आचार्य
७.	मुम्बादेवी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय भारतीय विद्याभवन, के० एम० मुन्शी मार्ग मुम्बई	प्राक्शास्त्री शास्त्री आचार्य

(२) सम्बद्ध संस्थाएं २०००-२००१

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
असम		
१.	माडर्न एस्ट्रोलोजिकल रिसर्च एसोसिएशन, तिनसुकिया, (असम)	प्रथमा, प्रथम, द्वितीय, तृतीय
बिहार		
२.	जगदीश नारायण ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत विद्यालय लगमा, ग्राम० पो० रामभद्रपुर वा० लोहनारोड जिला दरभंगा (बिहार)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा, प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
३.	देवराहा बाबा भक्त शिव शंकर संस्कृत महाविद्यालय, रामचन्द्रपुर	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम
४.	डा० रामजी मेहता संस्कृत महाविद्यालय मालीघाट, मुज्फ्फरपुर (बिहार)	प्रथमा- प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथमा, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नव्यव्याकरण, प्राचीन व्याकरण, सिद्धान्त ज्योतिष, फलित ज्योतिष, सर्वदर्शन)
५.	लक्ष्मी देवी सर्राफ आदर्श संस्कृत पाठशाला काली रेखा वैद्यनाथ धाम देवधर (झारखण्ड)	प्राक्शास्त्री-तृतीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य- प्रथम, द्वितीय
६.	राजकुमारी गणेश शर्मा संस्कृत विद्यापीठ कोलहन्टापटोरी पो० पटोरी बसंत जिला दरभंगा (बिहार)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्मध्यमा- प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (साहित्य, ज्योतिष (सि०व फ०) व्याकरण)

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
७.	श्री चन्द्रिका दास संस्कृत महाविद्यालय, घौरी, भोजपुर (बिहार)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तर मध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नव्य व्याकरण, वेद, ज्योतिष, दर्शन)
८.	सरस्वती आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, वेगूसराय बिहार	प्रथमा-प्रथम द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (साहित्य व्याकरण)
९.	श्री रामसुन्दर संस्कृत विश्वविद्याप्रतिष्ठान रमौली बेलान (लक्ष्मीनाथ नगर) बहेरा, दरभङ्गा (बिहार)	प्रथमा, प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा— प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम-द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम द्वितीय
१०.	डा० मण्डन मिश्र, माध्यमिक संस्कृत विद्यालय, संजात बेगुसराय (बिहार)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय
११.	अजित कुमार मेहता संस्कृत शिक्षण संस्थान, पो० लहदरा जि० समस्ती पुर (बिहार)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
१२.	लक्ष्मी हरिकान्त प्राथमिक संस्कृत माध्यमिक विद्यालय झंझारपुर, मधुबनी, बिहार	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
१३.	दीनानाथ मिथिला संस्कृत विद्यालय ग्राम—कालीधाम दरभंगा—बिहार	प्रथमा प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्व मध्यमा प्रथम, द्वितीय उत्तर मध्यमा—प्रथम, द्वितीय

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
१४.	जे० एन० बी०० आदर्श संस्कृत महाविद्यालय पो० ऑ०, लगया, राममद्रपुर, वाया, लोहना रोड, जिला दरभंगा (बिहार)	प्राक्शास्त्री— प्रथम, द्वितीय शास्त्री— प्रथम, द्वितीय आचार्य— प्रथम (वेद, व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष् और धर्मशास्त्र) विद्या वारिधि
१५.	प्राथमिक संस्कृत माध्यमिक विद्यालय दयालपुर, सारण विहार	प्रथमा— प्रथम, द्वितीय, तृतीय
दिल्ली		
१६.	श्री मोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, रमेशनगर, नई दिल्ली—१५	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय
१७.	ब्रह्मर्षि राम प्रपन्नाचार्य राजघाट पावर हाऊस गांधी समाधि, नई दिल्ली	पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
१८.	श्रीराम ज्योतिष कर्मकाण्ड महाविद्यालय, (राम विद्या सोसायटी के अंतर्गत) मंडावली, दिल्ली-११००९२	आचार्य-प्रथम, द्वितीय (कर्मकाण्ड, पौरोहित्य, ज्योतिष, फलित और सिद्धांत)
१९.	वसंत ग्राम आदर्श संस्कृत विद्यापीठ वसंत नगर, नयी दिल्ली-११००५७	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय
२०.	रामदल संस्कृत महाविद्यालय दरीबां कलाँ, दिल्ली	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
२१.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ १०२१-१०२४, गली शक्ति मन्दिर दरियागंज, नई दिल्ली-११००२	प्रथमा—प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
२२.	श्री समन्तभद्र संस्कृत महाविद्यालय दरियागंज नई दिल्ली	प्रथमा-तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तर मध्यमा- प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री -प्रथम, द्वितीय शास्त्री -प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय
२३.	श्री महावीर विद्यापीठ पश्चिम विहार, नई दिल्ली	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—(साहित्य व्याकरण, सर्वदर्शन) विद्यावारिधि
२४.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय एफ-४८७/३, रघुवीर नगर नई दिल्ली-११००२७	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा- प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय
२५.	आर्यकन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर नयी दिल्ली-११००६०	प्रथमा-तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तर मध्यमा-प्रथम, द्वितीय
२६.	राम ऋषि संस्कृत महाविद्यालय करोला, दिल्ली-११००८१	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम द्वितीय
२७.	आदर्श संस्कृत विद्यापीठ हरवली, दिल्ली-११००३९	प्रथमा-तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय
२८.	बाल विद्या मन्दिर रोहिणी, पूठ कलाँ दिल्ली—११००४१	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
२९.	तपोवन संस्कृत महाविद्यालय नजफगढ़ (दिचाऊँ कलाँ) नई दिल्ली-११००४३	प्रथमा, प्रथम द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय
३०.	इण्टरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेदिक साईंस बी-५/१७१, कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
गुजरात		
३१.	श्री समर्थ संस्कृत महाविद्यालय, समर्थेश्वर महादेव एलिस ब्रिज, अहमदाबाद—६	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
३२.	श्री रघुवर रामानंद वेदांत महाविद्यालय, श्री॰कौशलेन्द्र मठ, थो० पलाडी, सुरखेज रोड़ अहमदाबाद-गुजरात—३८०००७	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय तृतीय पूर्वमध्यमा, प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (रामानंद वेदांत)
३३.	एम. जे. पी संस्कृत महाविद्यालय नस्नपुर, अहमदाबाद-१३	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय तृतीय
३४.	दर्शनम संस्कृत महाविद्यालय सखल गांधी नगर,	प्रथमा-तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
३५.	श्री शंकराचार्य अभिनव सच्चिदानन्दतीर्थ संस्कृत महाविद्यालय, द्वारका-३६१३३५ गुजरात	प्रथमा, प्रथम, तृतीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम द्वितीय प्राक्शास्त्री, प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नवव्याकरण)
हरियाणा		
३६.	आलोक संस्कृत महाविद्यालय, महेन्द्र गढ़ (हरियाणा)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री - प्रथम, द्वितीय, तृतीय

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
३७.	हरियाणा संस्कृत विद्यापीठ बघौला, तहसील-पलवल जिला फरीदाबाद (हरियाणा)	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (साहित्य, व्याकरण)
३८.	श्री रामकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय जी. टी. रोड., मुरथल जिला-सोनीपत हरियाणा	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय
३९.	श्री रामानन्दा, ब्रह्मऋषि, महाविद्यालय, विराट नगर, पिंजौर (हरियाणा)	पूर्वमध्यमा प्रथम, द्वितीय
४०.	श्री लज्जाराम संस्कृत महाविद्यालय पाण्डुपिण्डारा, हरियाणा	प्रथमा—प्रथम पूर्वमध्यमा—प्रथम उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय
४१.	श्री कृष्ण प्रणामि संस्कृत महाविद्यालय, प्रणामि नगर (दादरी गेट) भिवानी, हरियाणा	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय, (साहित्य, व्याकरण)
जम्मू		
४२.	श्री गुरू गंगादेव शास्त्री महाविद्यालय, शिवशक्ती, सुंदरबणी राजौरी, जम्मू	प्रथमा-तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
केरला		
४३.	भारतीय संस्कृत महाविद्यालय, पायनूर-६७०३०७	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
४४.	रामकृष्ण आदर्श संस्कृत महाविद्यालय पो०-अरूणापुरम्, प्लाई (केरल)	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
४५.	श्री शंकर संस्कृत विद्यापीठम् पो० इडाक्काडम, इजहूकेन, क्वीलोन, केरल केरल	पूर्वमध्यमा- प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय
४६.	कालीकट आदर्श संस्कृत विद्यापीठ, कालीकट	प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय
४७.	कोडांगलूर विद्यापीठ पैलेस रोड, पो० कोडांगलूर जिला-त्रिचूर (केरल)	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय
४८.	श्री शंकर संस्कृत महाविद्यालय, वीमेन्स चैरिटेबुल सोसायटी, प्रधान कार्यालय, उलीन, त्रिवेन्द्रम—६९५०११	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय
कर्नाटक		
४९.	एकेडेमी आफ संस्कृत रिसर्च मेलकोटे	शास्त्री-प्रथम, द्वितीय द्वितीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (वेदांत, व्याकरण) विद्यावारिधि
महाराष्ट्र		
५०.	मुम्बादेवी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय भारतीय विद्याभवन, के० एम० मुन्शी मार्ग मुम्बई-४०००० ७	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय
५१.	श्री अंबाजी संस्कृत विद्यालय, निवेतिया रोड, वसंत मुंबई (महाराष्ट्र)—४०००९७	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
५२.	विवेकानंद संस्कृत पाठशाला विवेकानंद आश्रम, विवेकानंद नगर, पो, हिवाटा, (बी.यू.) तहसील मोहेकर, जिला बलधाना-(महाराष्ट्र) ४४३३०१	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
मणिपुर		
५३.	मणिपुर संस्कृत विद्यापीठ डी० एम० कालेज कैम्पस, इम्फाल मणिपुर	प्राक्शास्त्री-प्रथमा, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
५४.	राधामाधव संस्कृत महाविद्यालय, नाम्बूल मणिपुर	प्रथमा—प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय
मध्य प्रदेश		
५५.	आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, वसंत नगर, जौरा, जिला-मुरैना (म० प्र०)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
पंजाब		
५६.	बाबा हरदित गिरि विद्यालय संस्कृत-प्रचारिणी अखारा शिरहिन्द सिटी, जिला पटियाला-	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय
५७.	सरस्वती संस्कृत कालेज खन्ना—१४१४०१ जिला—लुधियाना (पंजाब)	प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री प्रथम, द्वितीय
राजस्थान		
५८.	नवजागृति संस्कृत विद्यापीठ, गंगापुर सिटी-३२२२०१ जिला-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
सिक्किम		
५९.	हरेश्वर संस्कृत विद्यापीठ, लिंग्म दार्जिलिंग हरलोक, लिंग्स बाया रीनक, पूर्व सिक्किम-७३७१३३	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
उत्तर-प्रदेश		
६०.	आदर्श संस्कृत विद्या परिषद् सल्ट महादेव जिला-पौडी गढवाल (उ० प्र०)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय
६१.	रानी पद्मावती तारा योग तंत्र महाविद्यालय संस्थान इन्द्रपुर, (शिवपुर) वाराणसी	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (साहित्य नव्यव्याकरण, फलित ज्योतिष, सर्वदर्शन, कर्मकाण्ड, वेद)
६२.	श्री वटुकानाथ संस्कृत महाविद्यालय बी-२२/१९५, द्वारिकाधीश मन्दिर, शंकुलधारा, वाराणसी-२२१०१०	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम-द्वितीय (साहित्य, नव्य व्याकरण)
६३.	गिन्नी देवी संस्कृत विद्यापीठ, मोदीनगर, उत्तर प्रदेश	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
६४.	श्री बिल्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, बिल्वेश्वर, पो० सिलयर, जिला०-मामर टिहरी गढ़वाल (उ० प्र०)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
६५.	श्री महर्षि कण्व संस्कृत विद्यालय, उदयरामपुर, कोटद्वार, गढ़वाल, उ० प्र०	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
६६.	श्री टीबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय, नैनीताल रोड, बरेली-उ० प्र०	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
६७.	गान्धी संस्कृत महाविद्यालय, पवरी गोहनिया, पो.ओ. जंसरा, इलाहाबाद	प्राक्शास्त्री-प्रथम द्वितीय शास्त्री-प्रथम द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नव्यव्याकरण)
६८.	अनन्ता देवी संस्कृत महाविद्यालय पी-ओ. कौधियार, इलाहाबाद (उ० प्र०)	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम द्वितीय (साहित्य व्याकरण)
६९.	देववाणी संस्कृत विद्यालय पो० आ० त्रियुगी नारायण, चमोली (उ० प्र०)	पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय
७०.	ज्वालपादेवी संस्कृत महाविद्यालय, ज्वालपा देवी मन्दिर पौड़ी गढ़वाल	शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय
पश्चिम बंगाल		
७१.	पगलानन्द संस्कृत महाविद्यालय दौरा पो० (कंटई) जिला-मिदनापुर पश्चिम बंगाल—७२१५०१	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय, पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय
७२.	श्री सीतारामदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय ७/२ पी. डब्ल्यू. डी. रोड, कलकत्ता-७०००३५	प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय विद्यावारिधि
७३.	ठाकुर गदाधर विद्यापीठ, पो० आरामबाग (कालीपुर) जिला हुगली (पश्चिमबंगाल)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री,-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (व्याकरण, साहित्य, नव्यन्याय)

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
७४.	कालियाचक विक्रम किशोर संस्कृत विद्यालय विद्यालय, गांव—कालियाचक पोस्ट ऑफिस हेरिया जिला—मिदनापुर (पश्चिम बंगाल)—७२१४३०	प्राक्शास्त्री प्रथम, द्वितीय शास्त्री प्रथम, द्वितीय आचार्य प्रथम, द्वितीय (साहित्य, धर्मशास्त्र, व्याकरण, सांख्य योग, नव्य न्याय वेदान्त)
७५.	मदर उषा मैमोरियल सैन्ट्रल इंस्टीट्यूशन एण्ड आगम (तंत्र) रिसर्च सैन्टर (मिनोरिटी इंस्टीट्यूट) गांव—वामनी गांव, पोस्ट ऑफिस (बैंकीदंगा) जिला—उत्तर प्रदेश (पश्चिम बंगाल)	प्रथमा प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्व मध्यमा—प्रथम, द्वितीय
७६.	भारतीय चतुष्पाठी श्री श्रीगुरु करुणा निकेतन, अम्पुलिया पारा, नवद्वीप, नादिया, (प० बंगाल)	प्रथमा— प्रथम पूर्वमध्यमा—प्रथम
७७.	विवेकानन्द वेद विद्यालय, रामा कृष्ण मठ, पो० ओ० वेलूर मठ जिला हावराह (पश्चिम बंगाल)—७११२०२	पूर्व मध्यमा प्रथम, द्वितीय उत्तर मध्यमा प्रथम, द्वितीय

विद्यावारिधि पाठ्यक्रम के लिए संबद्ध संस्थाओं की सूची

१. पूर्ण शंसोधन मन्दिर
पूर्णपज्ञा विद्यापीठ, पूर्णपज्ञा नगर
कठारीगुप्पा मेन रोड, बंगलोर-५६००२३

२. हरियाणा संस्कृत विद्यापीठ,
पी०ओ० बघोला, तहसील-पलवल,
जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

३. अकेडमी शोध संस्था
मेलकोट-५७१४३१, (कर्नाटक)

४. कुप्पुस्वामी शास्त्री शोध संस्था
८४, थेरु वी, का, रोड (रोयनपेत्ताह हाई रोड)
मैलापुरु मद्रास-६००००४

५. श्री महावीर विश्व-विद्यापीठ
पश्चिम विहार, नई दिल्ली-११००६३

६. वेद संस्थान,
सी-२२, रजौरी गार्डन, नई दिल्ली-११००२७

७. श्री सीताराम वैदिक आदर्श संस्कृत महाविद्यालय
७/२, पी. ओ. डी. रोड, कलकत्ता-७०००३६

८. सोशल हारमोनी शोध अक्षरधाम सेन्टर
जे. रोड सेक्टर-२०, गान्धी नगर,
अहमदाबाद-३८२०२०

९. शिव भारती शोध
जंगमवदी मठ, जंगमवदी,
वाराणसी-२२१००१ (यू.पी.)

१०. जे. एन. बी. आदर्श संस्कृत महाविद्यालय,
पी. ओ.-लगमा (आर० बी० पुर वाइया- लोहना रोड,
दरभंगा (बिहार) ८४७४०७

११. राजकुमारी गणेश शर्मा संस्कृत विद्यापीठ,
कोलहंता पटोरी, पी० ओ० पटोरी बसन्त
जिला दरभंगा-८४६००३

संस्थान की परीक्षाओं को मान्यता देने वाली संघ एवं राज्य सरकारों के नामों की सूची

१.	नं० ६/१२/७१ (डी) कैबिनेट सचिवालय कार्मिक विभाग, भारत सरकार, नयी दिल्ली	१-प्रथमा २-मध्यमा ३-शास्त्री ४. आचार्य ५. शिक्षाशास्त्री ६. विद्यावारिधि ७. वाचस्पति	= = = = = = =	मिडिल स्कूल उच्चतर माध्यमिक बी.ए. एम.ए. बी. एड पी-एच. डी. डी. लिट्.
२.	मध्यप्रदेश शासन, सामान्य प्रशासन विभाग नं० ७२५/७१६१(३)/७२ भोपाल, दिनांक ५.१२.१९७२			वही
३.	पंजाब सरकार, नं० ४७२-४६८-II ७२२६८६ दि० जनवरी १९७१			वही
४.	शिक्षा निदेशक मणिपुर ११/८/७१ एस ई दिनांक ३० अगस्त १९७२			वही
५.	शिक्षा निदेशक दिल्ली एफ-३२/१२५/शिक्षा/७२ दिनांक २९-१-१९७२			वही
६.	गोआ, दमन और दीव, विशेष/स्थापना/२६६५-११ दिनांक २३ अक्टूबर १९७२			वही
७.	तमिलनाडु सरकार, ज्ञापन सं० ९४१२०/एच-१७२, २ शिक्षा दिनांक—२ जनवरी, १९७३ पत्र संख्या-एल. डिस ३५०३३/०४	शिक्षाशास्त्री प्रथमा उत्तरमध्यमा पूर्वमध्यमा	= = = =	बी. एड. मिडिल स्कूल उच्चतर माध्यमिक मैट्रिक

८.	महाराष्ट्र सरकार-८२/दि० २४-९-८२ अनुरोध सं०-एस. एस. एन. ३२७१/१५७४२७-ई दिनांक २३ अक्टूबर १९७२	उत्तरमध्यमा	=	सीनियर स्कूल, सर्टिफिकेट प्राक्शास्त्री
९.	उत्तरप्रदेश सरकार सं० १०/२/१२१९ नियुक्ति (४) लखनऊ दिनांक २७ अगस्त १९७३	प्रथमा	=	मिडिल स्कूल (आठवीं कक्षा)
		पूर्वमध्यमा	=	हाईस्कूल
		उत्तरमध्यमा	=	इन्टरमीडिएट
		शास्त्री	=	बी. ए.
		आचार्य	=	एम. ए.
		शिक्षाशास्त्री	=	बी. एड.
		विद्यावारिधि	=	पी.एच.डी.
		वाचस्पति	=	डी. लिट्
१०.	हरियाणा सरकार सं० २१८, जी शिक्षा (एस ई) ७४/१४६२० चंडीगढ़ दिनांक १३-५-७४ ज्ञापन संघ-डी ४/५०-७३-सी ओ (२) दिनांक १२-२-१९८६	प्रथमा	=	मिडिल—VIII
		मध्यमा	=	हायर सकैंडरी या इंटरमीडिएट
		शास्त्री	=	बी.ए.
		आचार्य	=	एम.ए.
		शिक्षाशास्त्री	=	बी.एड
		विद्यावारिधि	=	पी-एच.डी.
		वाचस्पति	=	डी. लिट्
		शिक्षाशास्त्री	=	ओ. टी.

संस्थान की परीक्षाओं को मान्यता देने वाले विश्वविद्यालयों के नामों की सूची

१. महाराजा सायाजीराव विश्वविद्यालय, पत्र सं० एसी/११/२२१ दिनांक ३०-६-९३

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

२. सागर विश्वविद्यालय, सागर, पत्र सं० सामान्य/मान्यता/९७४ दिनांक १६.६.७८

मध्यमा	=	इंटरमीडिएट
शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

३. विक्रम विश्वविद्यालय प्रशासन/मान्यता/७३ दिनांक १ अगस्त १९७३

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.
शिक्षाशास्त्री	=	बी.एड.
विद्यावारिधि	=	पी.एच.डी.
वाचस्पति	=	डी. लिट्

४. आन्ध्र विश्वविद्यालय पत्र सं० १ (६) ३९२५/७२ दिनांक २७-९-९३

शिक्षाशास्त्री	=	बी.एड

५. राजस्थान विश्वविद्यालय संदर्भ सं० एफ-४-१/७२ (शैक्षिक-११/११४६/ए दिनांक २५-५-७३ जयपुर

शास्त्री	=	बी.ए.

६. कालीकट विश्वविद्यालय संदर्भ सं० जी ए (डी ४) ८९९/७२ दिनांक २८-११-१९७३

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

विद्यावारिधि	=	पी-एच० डी.
वाचस्पति	=	डी. लिट्.

७. श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय आर. ओ. सी. संख्या-सी. आई. ३३०१७/७३ दिनांक १२-१२-७३

शास्त्री	=	बी. ए.
आचार्य	=	एम. ए.

८. मगध विश्वविद्यालय पत्र सं० ४७६७ ४८-२३ डी ११/बोधगया दिनांक ४-१२-७३

मध्यमा	=	हायर सेकेण्डरी
शास्त्री	=	बी. ए.
आचार्य	=	एम. ए.
शिक्षाशास्त्री	=	बी. एड.
विद्यावारिधि	=	पी-एच-डी.

९. जम्मू विश्वविद्यालय पत्र संख्या-एफ. शैक्षिक V/१५३/७४/४/९५-९९ दिनांक १४-२-१९७४

मध्यमा	=	पूर्व विश्वविद्यालय
शास्त्री-भाग-१	=	बी. ए. भाग—१
शास्त्री-भाग-३	=	बी. ए. अंतिम वर्ष
आचार्य	=	एम. ए. संस्कृत या साहित्याचार्य

१०. अन्नामलाई विश्वविद्यालय एल. डिस्. पी-बी २१/८३/७३ दिनांक २२-२-१९७४

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

११. बर्दवान विश्वविद्यालय आर. सी. आई/समानार्थक/१४१/३७६१७४ दिनांक २४-६-७४

मध्यमा	=	विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रम
शास्त्री	=	कला-स्नातक परीक्षा (त्रिवर्षीय)
आचार्य	=	एम. ए.
विद्यावारिधि	=	पी-एच. डी.
वाचस्पति	=	डी. लिट्.

१२. कानपुर विश्वविद्यालय पी एस के बी/बोर्ड/४३१८/७४-७५ दिनांक २२-११-७४

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

१३. उत्कल विश्वविद्यालय पत्र सं० ए सी- १/आर. एम./१७१/५१०४६/७५ दिनांक १-७-१९९५

शास्त्री	=	बी.ए.

(द्रष्टव्य क्रम सं० ३२ सी)

१४. पूना विश्वविद्यालय ई एल जी/समकक्षता-१०९/३९४९/दिनांक २६-४-१९७५

प्राक्शास्त्री	=	प्री-डिग्री
शास्त्री	=	बी.ए.संस्कृत
आचार्य	=	एम. ए. संस्कृत
शिक्षाशास्त्री	=	बी.एड.संस्कृत

१५. जयपुर विश्वविद्यालय पत्र सं० ई०/३०१३ दिनांक १३-५-१९७५

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

१६. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय पत्र सं० ए सी एम-११/६११५ दिनांक ६-६-१९७५ और ए सी एम/११/१३७/७/७६११००० दिनांक ७-८-७५

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम.ए.

१७. गुजरात विश्वविद्यालय परीक्षा/बी. मान्यता सं० ३२४८२ दिनांक १७-९-१९७५

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

१८. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् पत्र संख्या-एफ. ३६/ओईन ३१/संस्कृत/२२७२१ दिनांक २३-१२-७४

प्रथमा	=	मिडिल स्कूल तथा परिषद् से सम्बद्ध विद्यालयों में नवीं कक्षा में प्रवेश हेतु।

१९. केरल विश्वविद्यालय पत्र सं० सी-३/७२०/७६ जिला त्रिवेन्द्रम दिनांक २२-३-७६

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

२०. विश्वभारती पत्र सं० जी-४-४३ दिनांक २३-४-७६

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.
विद्यावारिधि	=	पी-एच. डी.
वाचस्पति	=	डी. लिट्.

२१. भारतीय विश्वविद्यालय संघ पत्र सं० ई वी—११९२२/७६/३२७३५ दिनांक ७-२-७६

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

२२. हिमाचलप्रदेश विश्वविद्यालय पत्र सं० १२/१३/७२ एच पी यू (शैक्षिक) दिनांक १९-१२-७७

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.
विद्यावारिधि	=	पी-एच. डी.
वाचस्पति	=	डी. लिट्.

२३. दिल्ली विश्वविद्यालय पत्र सं०-१/मान्यता/डी/८४ दिनांक १४-११-८४

शास्त्री	=	(बी.ए. पासकोर्स) एम. ए. संस्कृत में प्रवेश के लिए
आचार्य	=	एम. ए.

२४. संभलपुर विश्वविद्यालय पत्र सं० ११७२७/शैक्षिक-दिनांक ४-५-७९

शास्त्री	=	बी.ए. (एम. ए. संस्कृत में प्रवेश हेतु)

२५. श्री कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय पत्र संख्या-९३५६७४ दिनांक ४-१०-७४

मध्यमा	=	मध्यमा
शास्त्री	=	शास्त्री
आचार्य	=	आचार्य
शिक्षाशास्त्री	=	शिक्षाशास्त्री
विद्यावारिधि	=	विद्यावारिधि
वाचस्पति	=	विद्या वाचस्पति

२६. कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़ पत्र सं०-मान्यता/के- १०८/शैक्षिक/१५०४ दिनांक १२-७-७९

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

२७. गुरुनानक देव विश्ववद्यालय अमृतसर पत्र सं० सामान्य/मान्यता/३९२० दिनांक २२-४-१९८०

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम.ए.

२८. मद्रास विश्वविद्यालय पत्र सं० सी आर-III/मान्यता /१९२५ दिनांक १७-३-१९८०

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम.ए.

(यदि पाठ्यक्रम में अंग्रेजी एक विषय के रूप में हो)

२९. पंजाब विश्वविद्यालय पत्र सं० एस-१६८८१ दिनांक २८-११-१९८०

प्रथमा	=	प्राज्ञ
मध्यमा	=	विशारद
शास्त्री	=	शास्त्री
आचार्य	=	आचार्य

३०. श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय पत्र सं० ५१६३/८४/एस.जे. एस. बी. दिनांक १०-८-८४

प्रथमा	=	प्रथमा
पूर्वमध्यमा	=	मध्यमा
उत्तरमध्यमा	=	उपशास्त्री
शास्त्री	=	शास्त्री
आचार्य	=	आचार्य
विद्यावारिधि	=	विद्यावारिधि
वाचस्पति	=	वाचस्पति

३१. बरहमपुर विश्वविद्यालय/भंज विहार, वरहमपुर, जिला-गंजाम उड़ीसा पत्र सं० ५१३१/शैक्षिक -११/बी यू/८४ दिनांक १६-४-८४

शास्त्री	=	बी.ए. (पास)
आचार्य	=	एम. ए. (संस्कृत)

३२. उत्कल विश्वविद्यालय भुवनेश्वर (उड़ीसा) पत्र सं० १८८२६ दिनांक ५-६-८४

आचार्य	=	एम. ए. संस्कृत

(बी.ए.स्तर तक अंग्रेजी सहित)

३३. त्रिभुवन विश्वविद्यालय मछली टेकू काठमांडू नेपाल पत्र सं० ३७२/८४ दिनांक १९-९-८४

प्राकशास्त्री	=	प्राक्शास्त्री
शास्त्री	=	शास्त्री

३४. संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी पत्र सं० जी-४५८/४०१९/७४-८५

प्राक्शास्त्री	=	प्राक्शास्त्री
शास्त्री	=	शास्त्री

३५. भोपाल विश्वविद्यालय भोपाल पत्र सं० १११२/बी यू/शैक्षिक/८५ दिनांक १५-३-८५

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम.ए.
शिक्षाशास्त्री	=	बी.एड.
विद्यावारिधि	=	पी-एच.डी.
वाचस्पति	=	डी. लिट्.

३६. संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी पत्र सं० शै०-१७२२/९२ दिनांक २२-१२-९२

आचार्य	=	आचार्य
विद्यावारिधि	=	विद्यावारिधि (पी. एच. डी.)
वाचस्पति	=	वाचस्पति (डी. लिट्.)

३७. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र पत्र सं०-ए सी एम/११/१३७/९२/३२४८९ दिनांक २८-१२-९२

शास्त्री (अंग्रेजी विषय के साथ)	=	बी.ए. (पास) टी डी सी (१० + १ + ३ योजना के अंतर्गत) परंतु विद्यार्थी अंग्रेजी विषय के साथ उत्तीर्ण हो।
शास्त्री	=	शास्त्री
आचार्य	=	एम. ए.

(यदि विद्यार्थी ने अंग्रेजी विषय के साथ बी.ए. उत्तीर्ण किया हो)

३८. मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार/शिक्षा नयी दिल्ली के पत्र सं. एफ-७-२/८३-संस्कृत- २ दिनांक ३१ दिसम्बर १९९२

शिक्षाचार्य = एम.एड.

३९. रवि शंकर विश्वविद्यालय पत्र सं० २९४७/ए के ए मान्यता/९० रायपुर दिनांक ३-८-१९९०

४०. मणिपुर विश्वविद्यालय कांचीपुर-इम्फाल नोटिस दिनांक ३ जनवरी १९९२

शास्त्री = अंग्रेजी विषय के साथ बी.ए.

४१. अजमेर विश्वविद्यालय पत्र सं० एफ १४(१९३ शिक्षा-११/यू ओ ए/९२/३४००/३५०६ दिनांक ६ फरवरी १९९२

शिक्षाशास्त्री = बी.एड.